लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वन्दे मातरम्

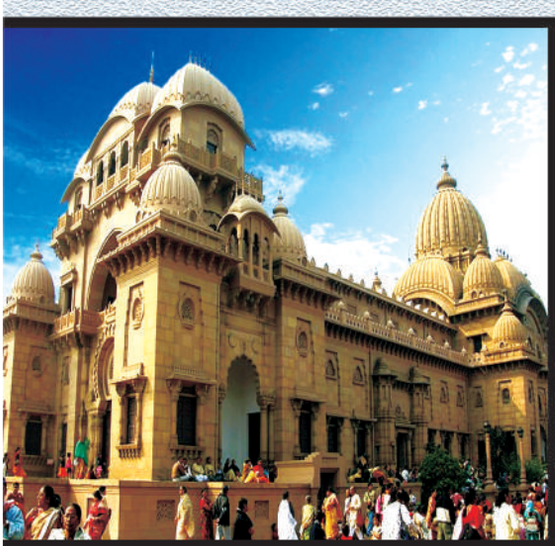

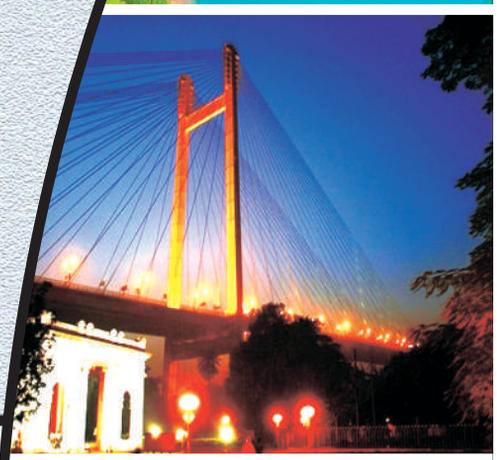

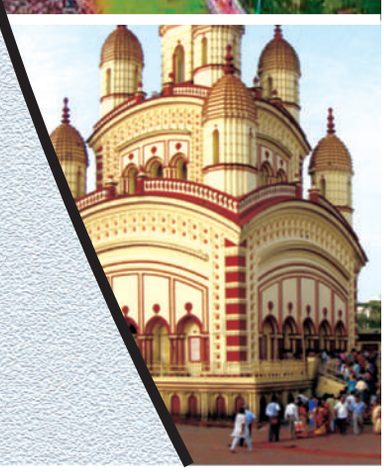

उन्नीसवाँ अंक
2019

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

पत्रिका विमोचन समारोह
"वंदे मातरम्"
अठारहवाँ अंक

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी पत्रिका

वन्दे मातरम्

अर्धवार्षिक पत्रिका 2019 उन्नीसवाँ अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

पत्रिका परिवार

संरक्षक	:	श्रीमती अदिति रॉय चौधुरी प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
परामर्शदातृ समिति	:	श्री गौरव राय, उपमहालेखाकार (प्रशासन) श्री शीश राम, उपमहालेखाकार (पेंशन) श्री राहुल कुमार, उपमहालेखाकार (निधि, लेखा एवं वी एल सी)
प्रधान संपादक	:	श्री रेबती रंजन पोद्दार, लेखा अधिकारी
संपादक	:	श्री चन्दन कुमार बढ़ई, हिन्दी अधिकारी
उपसंपादक	:	श्री सन्नी कुमार, कनिष्ठ अनुवादक
सहायक	:	श्री कुन्दन कुमार रविदास, कनिष्ठ अनुवादक श्री जितेंद्र शर्मा, वरिष्ठ लेखाकार श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह, कनिष्ठ अनुवादक श्रीमती आस्था गुप्ता, लेखाकार श्री अमित कुमार, वरिष्ठ लेखाकार
टंकण कार्य	:	श्री अतुल कुमार, लेखाकार

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना
जरूरी नहीं हैं क्योंकि वे उनके निजी विचार होते हैं।

अदिति रॉय चौधुरी

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700001

संदेश

हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका **"वन्दे मातरम्"** का उन्नीसवाँ अंक आप को समर्पित है। विभागीय पत्रिकाएँ कार्यालय में सकारात्मक माहौल बनाती हैं और कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को अवसर प्रदान करती हैं।

साथ ही कार्यालीन हिन्दी पत्रिका **"वन्दे मातरम्"** ने हिन्दी के प्रति पाठकों की अभिरुचि बढ़ाने का सदैव प्रशंसनीय कार्य किया है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका अपने प्रगति-पथ पर निरंतर अग्रसर रहते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में पूर्णतः सफल रहेगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई।

अदिति रॉय चौधुरी

राहुल कुमार
उपमहालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

कार्यालयी हिन्दी पत्रिका **"वन्दे मातरम्"** के उन्नीसवें अंक का प्रकाशन हमारे लिए एक हर्ष का विषय है। आशा है कि इस बार भी **"वन्दे मातरम्"** ज्ञान, प्रेरणा, नैतिक बोध, साहित्य, एवं स्वस्थ मनोरंजन से ओत-प्रोत रहेगी। पाठकों के बिना पाठ्य सामग्री का महत्व नहीं रह जाता है। मैं उम्मीद करता हूँ कि सुधी पाठकों द्वारा इस अंक को भी पहले की भांति स्नेह एवं सराहना मिलेगी।

अंत में इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को बधाई देता हूँ, साथ ही पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

राहुल कुमार

राहुल कुमार

संपादकीय

अपनी भाषा न केवल अभिव्यक्ति को सहज बनाती है बल्कि यह व्यक्ति के जड़ों की पहचान भी कराती है। अपनी भाषा में अभिमान और गौरव का पुट होता है। विदेशी भाषा पर निर्भरता विकास में बाधक सिद्ध होती है।

यद्यपि भारत में, कई बोलियाँ विद्यमान है, तथापि हिन्दी ऐसी भाषा है जो सहजता से बोली, समझी, एवं सीखी जा सकती है। वर्तमान परिदृश्य में हिन्दी का दायरा केवल भारत तक सीमित नहीं बल्कि यह एक ग्लोबल भाषा बनकर उभर रही है।

हमारे कार्यालय की पत्रिका **"वंदे मातरम्"** का उद्देश्य हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान करना है। इस उद्देश्य में हम कितने सफल हो पाएँ हैं, यह अवश्य बताएँ।

चन्दन कुमार बढ़ई
(संपादक)
हिन्दी अधिकारी

आपके पत्र..........

कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), तमिलनाडु
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL
(ECONOMIC AND REVENUE SECTOR AUDIT), TAMILNADU

सं. मले.(आ.व रा.क्षे.लेप.)/हि.अ./प्रशंसा पत्र/7-38/2019-20/16 दिनांक:24.05.2019

(126)

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.),
पश्चिम बंगाल, ट्रेज़री बिल्डिंग्स,
कोलकाता- 700 001

विषय : हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम्' की 18वें अंक की पावति ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'वंदे मातरम्' की 18वें अंक की पीडीएफ फोर्मेट में ई-मेल द्वारा पत्र संख्या पी.ए.जी.ए.ई.इब्ल्यू.बी./02 /05/वं.मा./14/ 2019-20/ दिनांक 02.05.2019 के तहत प्राप्त हुआ । सहर्ष धन्यवाद ।

सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए किया गया आपका यह प्रयास सराहनीय है । पत्रिका में रचनाकारों ने साहित्य के विभिन्न विधाएँ यथा – कविता, कहानी, लेख आदि पर अपनी रचनाएं प्रस्तुत की हैं। इससे कार्यालय के कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा की झलक देखने को मिलती है । कथादेश, अपना घर, वैदेही, संघर्ष से सफलता तक, हिंदी - एक व्यवहार आदि रचनाएँ विशेष सराहनीय हैं एवं पत्रिका की साज-सज्जा, और अन्तर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम हैं ।

सारांशतः राजभाषा हिन्दी के विकास में पत्रिका ने अपने महती भूमिका का निर्वाह किया है । पत्रिका भविष्य में भी अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हो, ऐसी कामना है ।

53057

भवदीया,

हिंदी अधिकारी

"लेखापरीक्षा भवन" 361, अण्णा सालै, चेन्नै – 600 018, "Lekha Pariksha Bhavan", 361, Anna Salai, Chennai - 600 018.
दू.भा/Phone : 044 - 24316660 to 6666 ; फैक्स/Fax : 044 - 2431 1659 तार/Telegram : "AUDITTWO" Chennai
ई-मेल/E-mail : agautamilnadu2@cag.gov.in

---

(116)

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय - महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा: भुवनेश्वर - 751001
O/o the Accountant General (A&E), Odisha, Bhubaneswar - 751001

संख्या-हिप्र/पत्रिका/31 दिनांक- 20.05.2019

सेवा में,
संपादक "वंदे मातरम्"
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता-700001

विषय: अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "वंदे मातरम्" के अठारहवें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण ।

21 MAY 2019

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "वंदे मातरम्" के अठारहवें अंक की प्रति को हमने आपके द्वारा उपलब्ध कराई गई कार्यालय की वेबसाइट पर देखा और पढ़ा । पत्रिका के मुखपृष्ठ का दृश्य अत्यंत ही मनोरम और आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक एवं पठनीय है। श्रीमती तापसी आचार्य (बसाक) की कहानी "अपना घर", श्रीमती आस्था गुप्ता की कहानी "संघर्ष से सफलता तक", श्री सन्नी कुमार का एकांकी "हिंदी एक व्यवहार", सुश्री आरती शर्मा की कविता "वक्त" एवं श्री अमित कुमार की कविता "समय" विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। उत्कृष्ट साज-सज्जा एवं संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

20.05.2019
(रवीन्द्र नाथ चाँद)
संपादक (वातायन)/
हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़
Indian Audit & Accounts Department
Office of The Director General of Audit (Central), Chandigarh

सं. डीजीए/प्रशा./पत्रिका/2019-20/490 (118) दिनांक – 24.05.2019

सेवा में,

श्री चंदन कुमार बढ़ई
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), प. बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2 गवर्मेंट प्लेस (वेस्ट),
कोलकाता – 700 001.

विषय – हिंदी ई-पत्रिका "वंदे मातरम" के अठारहवें अंक की पावती एवं प्रतिक्रिया ।

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र सं. पी.ए.जी.ए.ई.डब्ल्यू.बी./02/05/वं.मा./14/2019-20 दिनांक 02.05.2019 के साथ ई-पत्रिका वंदे मातरम के अठारहवें अंक की प्रति प्राप्त हुई, इस हेतु धन्यवाद ।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ स्तरीय, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक है । श्री चंदन कुमार बढ़ई का लेख 'कथादेश', श्री कुंदन कुमार रविदास की कहानी 'उम्मीद', श्री जितेन्द्र शर्मा की कविता 'दौड़' तथा श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह की कविता 'वैदेही' विशेष रुप से प्रशंसनीय हैं ।

कविता के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई ।

भवदीय,

लेखा अधिकारी (प्रशासन)

प्लाट न. 20-21, सेक्टर - 17ई, चण्डीगढ़ – 160017 Plot No. 20-21, Sector-17E, Chandigarh - 160017
दूरभाष/Tel.No. 0172 - 2782820 & 2786117 फैक्स/FAX No.0172 - 2782821 / 2783974 ई-मेल/Email: pdacchandigarh@cag.gov.in

---

महालेखाकार (सा.एवं सा.क्षे.लेप.) का कार्यालय
ओड़िशा, भुवनेश्वर

(128)

सं.हि.प्रको./पत्रिका पावती/14/19-20/34 दिनांक- 24.05.2019

सेवा में,
लेखा अधिकारी (प्रशा हिन्दी सेल),
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स
कोलकाता - 700 001

विषय:- हिन्दी अर्धवार्षिक पत्रिका "वंदे मातरम्" के 18वें अंक की पावती के संबंध में ।

महोदय,

आपके पत्र सं.-पी.ए.जी.ए.ई.डब्ल्यू.बी./02/05/वं.मा./14/2019-20, दिनांक-02.05.2019 के साथ कार्यालय की अर्धवार्षिक पत्रिका "वंदे मातरम्" के 18वें अंक की प्राप्ति हुई, एतदर्थ धन्यवाद ।

पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत मनमोहक है । पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है । विशेषकर "कथादेश", "वैदेही", "उम्मीद" एवं "ब्रांड बनता आदमी" विचार प्रधान प्रेरक एवं उपयोगी है । पत्रिका के सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका के प्रगति के लिए हार्दिक शुभ कामनाएं ।

यह पावती वरि. उपमहालेखाकार (प्रशासन) के अनुमोदनोपरान्त जारी किया जाता है ।

53090
JUN 2019

भवदीय,
24.05.19
वरि. उपमहालेखाकार / प्रशा.

आपके पत्र..........

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपूर
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)-II, MAHARASHTRA, NAGPUR

सं.हिंदीअनुभाग/ प्रतिक्रिया/22/2019-20/जा.क्र. 136
दिनांक 21-05-2019

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता- 700001

विषय:- हिंदी गृह पत्रिका "वंदे मातरम" के 18 वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "वीरांगना" के 69 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्रीमती तापसी आचार्य की रचना 'अपना घर', श्री पंकज कुमार गुप्ता की रचना "यादें", श्री अमित कुमार की रचना 'ब्रांड बदलता आदमी' सुश्री प्रियंका संजीव सिंह की रचना 'वैदेही' अति उल्लेखनीय हैं ।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है । कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'लेखापरीक्षा भवन',डाक थैली क्र. 220, सिविल लाईन्स, नागपुर–440001
दूरभाष / Telephone - 0712-2564508 To 2564510
फैक्स / Fax - 0712-2524130
'Audit Bhawan' Post Bag No. 220, Civil Lines, Nagpur-440001
website : http://agmaha.cag.gov.in
e-mail : agaumaharashtra2@cag.gov.in

OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं० हि०क० / ले०प० / पत्रिका समीक्षा / 2019-20 /54 — दिनांक:-23.05.2019

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी (प्रशासन हिन्दी सैल)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पश्चिम बंगाल, टेजरी बिल्डिग्स,
कोलकाता–700001

विषय: अर्धवार्षिक ई–पत्रिका 'वंदे मातरम' के अठारहवें अंक का प्रेषण ।

महोदय,

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक पत्रिका 'वंदे मातरम' के 18 वें अंक की सॉफ्ट प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

भवदीय,
लेखा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

Gorton Castle Building, Shimla-171 003

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड का कार्यालय, राँची - 834002
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
JHARKHAND, RANCHI - 834002

पत्रांक- हि.प्र./ले.प./2019-20/ 26 — दिनांक- 15/05/2019

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी /प्रशासन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता-700001

विषय- हिन्दी पत्रिका **वंदे मातरम** के 18 वें अंक की प्राप्ति।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका **वंदे मातरम** के 18 वें अंक की प्राप्ति हुई है | पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चत्तर श्रेणी की हैं |

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी प्रकोष्ठ)

दूरभाष / Telephone : 0651-2411670/2413690 फैक्स / Fax : 0651-2412517/2413701 ई-मेल / e-mail : agaujharkhand@cag.gov.in

---

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर – 190001

सं:- हिन्दी कक्ष/ले.प./पत्रिका पावती/2019-20/ 127
दिनांक: 14/06/2019

सेवा में,

लेखा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
पश्चिम बंगाल , ट्रेजरी बिल्डिंग्स,कोलकाता - 700001

विषय: हिन्दी पत्रिका **"वंदे मातरम"** के 17 वे अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र सं: **पी.ए.जी.ए.ई.डब्ल्यू.बी.**/02/05/वं.मा./14/2018-19/598 **दिनांक** 25.02.2019 के साथ हिन्दी पत्रिका **"वंदे मातरम"** के 17 वे अंक की प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका के मुखपृष्ठ पर दिया चित्र मनमोहक है।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय हैं। विशेषकर पत्रिका में **"अमावस का दृढ़संकल्प"** , **"चलते जाना है"** तथा **"मैं प्राचीन बरगद का पेड़ हूँ"** मुद्रित रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में पृष्ठों की गुणवत्ता तथा मुद्रित छाया चित्र प्रशंसा के योग्य है।

हिन्दी भाषा की प्रगति हेतु कार्यालयीन पत्रिका के 17 वे अंक के सफल प्रकाशन हेतु आप सभी को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,
लेखापरीक्षा अधिकारी (हि.क.)

आपके पत्र..........

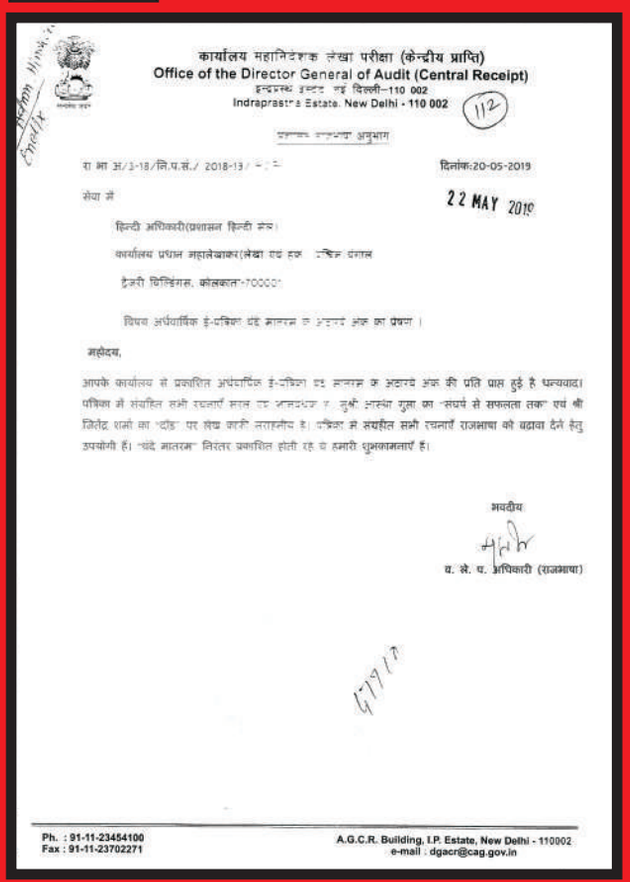

कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय प्राप्ति)
Office of the Director General of Audit (Central Receipt)
इन्द्रप्रस्थ इस्टेट नई दिल्ली–110 002
Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002

प्रशासन राजभाषा अनुभाग

रा भा अ/3-18/लि.प.सं./ 2018-19/

दिनांक:20-05-2019

22 MAY 2019

सेवा में

हिन्दी अधिकारी(प्रशासन हिन्दी सेल)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हक) पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता-700001

विषय अर्धवार्षिक ई-पत्रिका वंदे मातरम के अठारवे अंक का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित अर्धवार्षिक ई-पत्रिका वंदे मातरम के अठारवे अंक की प्रति प्राप्त हुई है धन्यवाद। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ सरल एवं ज्ञानवर्धक हैं। सुश्री आस्था गुप्ता का "संघर्ष से सफलता तक" एवं श्री जितेंद्र शर्मा का "दौड़" पर लेख काफी सराहनीय है। पत्रिका में संग्रहीत सभी रचनाएँ राजभाषा को बढ़ावा देने हेतु उपयोगी हैं। "वंदे मातरम" निरंतर प्रकाशित होती रहे ये हमारी शुभकामनाएँ हैं।

भवदीय

व. ले. प. अधिकारी (राजभाषा)

Ph. : 91-11-23454100
Fax : 91-11-23702271

A.G.C.R. Building, I.P. Estate, New Delhi - 110002
e-mail : dgacr@cag.gov.in

"आपके स्नेह के हम आभारी हैं कि आपने हमें अपना अभिमत भेजा। पत्रिका के बेहतर भविष्य के लिए इसी प्रकार अपनी राय एवं सुझाव देकर हमारा उचित मार्गदर्शन करते रहें।"

कार्यालय में आयोजित विविध कार्यक्रमों की झलकियाँ।

कार्यालय में आयोजित विविध गतिविधियों के दृश्य।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	भुवनमनमोहिनी (लेख)	श्रीमती लिपिका दास	01
2.	रोमांचक एवं आनंदमय यात्रा (यात्रा वृतांत)	श्री रेबती रंजन पोद्दार	03
3.	बालिका वधू (लेख)	श्री चन्दन कुमार	06
4.	कराहता बचपन (कविता)	श्रीमती आस्था गुप्ता	08
5.	केदारकंठ ट्रेक (यात्रा वृतांत)	श्री नबेन्दु दाशगुप्त	09
6.	तुम्हें आगे बढ़ना होगा (कविता)	श्री जितेंद्र शर्मा	13
7.	दैव-दैव आलसी पुकारा (कहानी)	श्री आनंद कुमार पाण्डेय	15
8.	मैं कुछ कहना चाहती हूँ (कविता)	सुश्री आरती शर्मा	17
9.	घर जमाई (कहानी)	श्री सन्नी कुमार	18
10.	आत्म जागरण (कविता)	श्रीमती तापसी आचार्य (बसाक)	21
11.	रमा (कहानी)	श्रीमती आस्था गुप्ता	24
12.	दर्द-ए-जुदाई सही नहीं जाए (कविता)	श्री अमित कुमार	28
13.	प्यार की पुकार (कहानी)	श्री शुभदीप चट्टोपाध्याय	30
14.	घड़ी (कविता)	सुश्री दिपान्विता पात्र	32
15.	सपनों का महल (कहानी)	श्री अमित कुमार	33
16.	श्री रामकृष्ण परमहंस (लेख)	श्रीमती सुस्मिता सरकार	36

टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।
मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।

हिन्दी पखवाड़ा 2019 के अवसर पर आयोजित विविध प्रतियोगिताओं की झलकियाँ

कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्याशाला की झलकियाँ

भुवनमनमोहिनी माँ

ॐ जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाधुतिम्।
तमो रिं सर्वपाहनं प्रणतोहस्मि दिवाकरम्।

हे सूर्यदेव प्रणाम, आपकी तेजोराशि हमारी जीवन को सदा उज्ज्वल तथा आलोकित करें। हमारे जीवन को स्वच्छ एवं बाधामुक्त बनाएँ।

हमारा देश शस्य श्यामला है, जहां विविध जातियों का रहन, विविध भाषाओं की बोलियाँ और विविध संस्कृतियों का मेल दिखाई देता है। इसलिए कहा जाता है कि-वसुधैव कुटुंबकम। लेकिन वर्तमान समाज में सांप्रदायिकता और जातिवाद – दोनों विषयों को लेकर देशवासियों के बीच तरह-तरह के मतभेद दिखाई दे रहे हैं। वे अपने बीच एक संघर्ष का संबंध तैयार कर रहे हैं। जो एक स्वस्थ समाज के अनुरूप नहीं है। वर्तमान समाज में धर्म को भी नहीं छोड़ा जा रहा है। लोग आपस में कोई धर्म विशेष को लेकर लगातार लड़ाई-मतभेद में शामिल हो रहे हैं। फलस्वरूप, हमारे देश की धर्मनिरपेक्षता का अपमान किया जा रहा है।

भारतीय साहित्य के इतिहास पर नजर डालते हुए कहा जाता है कि विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने मातृभूमि के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पण करते हुए लिखा था –

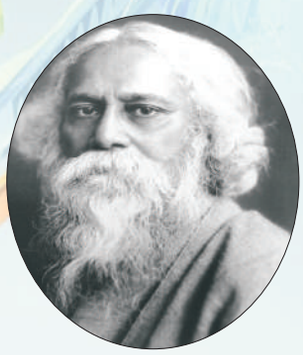

एक बांग्ला गीत का हिन्दी रूपांतर –
ऐ हमारी देश की मिट्टी, तुम पर हम
सर झुकाएँ।
तुम पर विश्वमाता ने अपने आँचल
फैलाई है।।

उनके इस लेख से देशभक्ति का परिचय मिलता है। एक विश्व मैत्री का स्पष्टीकरण किया गया है। हम सब जानते कि सन 1919 ई. के 13 अप्रैल को पंजाब के अमृतसर में जालियाँवालाबाग हत्याकांड में करीब 400 लोगों को अँग्रेजी सरकार के आदेश पर गोलियों से मौत के घाट उतार दिया गया था। इस घटना के प्रतिवादस्वरूप कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अंग्रेज़ सरकार द्वारा प्रदत्त 'नाइटहूड' उपाधि ग्रहण करने से इंकार कर दिया था। इसके अलावा सन 1905 ई. में लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल को दो भागों में विभाजित करने के सरकार के फैसले 'बंग-भंग' के विरोध में 17 सितंबर 1905 को विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कोलकाता के सावित्री लाइब्रेरी में सर्वधर्म समिति के विशेष अधिवेशन में 'रक्षाबंधन' मनाने की घोषणा की। जहां हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आदि धर्मों के लोग एक दूसरे को राखी बांध कर इसका विरोध कर रहे थे। सांप्रदायिकता के इतिहास में एक नवजागरण के रूप में यह एक घटना उल्लिखित है। इसके अलावा चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह आदि क्रांतिकारियों ने हमारे देश की आज़ादी, सांप्रदायिक, धर्म-निरपेक्षता आदि के प्रसार में मुख्य भूमिका निभाई तथा उनका बलिदान स्मरणीय है।

पर वर्तमान समाज इन सब बातों को भूलकर जाति-द्वेष तथा धर्म को लेकर एक मुठभेड़ में फंसे हैं। वे भूल जाते हैं कि हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी धर्म के लोगों के खून का रंग एक ही है – लाल। सभी लोग अपनी माता को माँ कहकर पुकारते हैं। माँ का दूध पीकर बड़े होते हैं। हो सकता है कि उन सब की बोली अलग हो, भेषभूषा अलग हों आखिर वे मनुष्य ही तो हैं। तब वे क्यों भूल जाते हैं कि 'अनेकता में एकता है'। प्राचीन काल के धर्म को भी नहीं छोड़ा जा रहा है। चूंकि हम जानते हैं कि हमारे संविधान में धर्मनिरपेक्षता पर कहा गया है कि हमारे

देश में सभी धर्म को उनको अपना दर्जा दिया जाएगा। कोई भी किसी भी धर्म को अपना सकता है तथा उसके नियमानुसार अपना जीवन बीता सकता है। किसी पर कोई पाबंदी नहीं लगाया जाएगा। वर्तमान काल में हम सब अपनी सहनशीलता को खो रहे हैं। किसी के पास किसी दूसरे की बात सुनने का ना तो अवसर है न ही धैर्य है। हर समय सभी लोग मशीन की तरह दौड़ रहे हैं।

इसी सांप्रदायिकता और जातीयता को ध्यान में रखते हुए काज़ी नज़रुल इस्लाम ने गीत की रचना की थी,जो आज भी प्रासंगिक है-

(बांग्ला गीत का रूपांतर)

'हम एक ही डाल के दो फूल हैं –
हिन्दू – मुस्लिम
मुस्लिम है आँखों का तारा और
हिन्दू उसका प्राण'

दूसरी ओर प्रकृति जिसकी गोद में हम बड़े होते हैं वह भी हमसे नाराज़ हो रही हैं। जैसे – वर्तमान काल में ऋतु परिवर्तन में भी असमानता दिखाई देती है। उल्लेखनीय है कि जुलाई 2019 को काफी सूखा महीना बोला जा रहा है हालांकि यह बरसात का महीना है। बारिश का परिमाण लगभग 56% है। फलतः फसल की उपज ठीक मात्रा में नहीं हो रही है। वजह पेड़ काटकर चारों ओर सिर्फ कंक्रीट का जंगल बनाया जा रहा है। जलवायु में ऑक्सीज़न की कमी होती जा रही है। पेड़ जो चारो ओर अपनी बाहें फैलाकर हमें शीतल छाया प्रदान करते थे, आज वे कहाँ हैं? हरा रंग जिसे देखकर आँखों को शांति मिलती है आज उसका काफी अभाव है। दिन प्रतिदिन गर्मी बढ़ती जा रही है। कोकिला की कुहु-कुहु सुनाई नहीं देती है। शहर तो मानो ऊंचे ऊंचे ईमारतों का एक कारख़ाना बन गया हो।

बरसात की कमी के कारण नदी, तालाब आदि में पानी की कमी दिखाई देती है। आम जनता के जीवन पर काफी असर पड़ता है। जहां भी देखो लगता है कि हम सब पेड़-पौधे काटकर, तालाब को सुखाकर बड़े बड़े इमारतें बनाने की प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं। फलतः प्रकृति का रोष और बढ़ रहा है।

पर हमारी शस्य श्यामला देश में तो काफी साधन हैं जिससे हम प्रकृति को बचा सकते हैं। पानी का उपयोग सही रूप से करना ही श्रेष्ठ है। हमारी भारतमाता काफी कोमल स्वभाव की हैं, उनके पास अपार स्नेह, आशीर्वाद एवं करुणा है जिससे हम अपने स्वभाव को बदल सकते हैं। हमें क्रोध, असहिष्णुता, घृणा, हिंसा आदि अपने मन से दूर करना है। सर्वोपरि हमें निर्लोभी होना चाहिए। हमारी मांगो को कम करना चाहिए। एक दूसरे के प्रति स्नेह, ममता, प्यार बढ़ाना चाहिए। हमें अपनी मातृभूमि का सम्मान करते हुए न केवल हिंसा को दूर वरन घृणा को भी मन से हटाना चाहिए। हम मानव हैं जो जीवों में श्रेष्ठ है। अतः हम ही अपने समाज को बदल सकते हैं। हमें सोचना है कि हम सब एक हैं। एक ही माता की संतान हैं ---- वह है भारतमाता, यानी "ऐ भुवनमनमोहिनी माँ"। सांप्रदायिकता और जातिवाद को भुलाकर हम सब को मिलकर एक मुट्ठी बनाकर अपने हाथ को और दृढ़ और बलवान बनाना चाहिए जिसे कोई घनघोर बाधा-विघ्न भी तोड़ न सके।

"भारतमाता की जय" ।

लिपिका दास
स.ले.अ./फंड-II

रोमांचक एवं आनंदमय यात्रा

यह मई, 1998 की बात है। मेरी नेपाल यात्रा की शुरूआत एक बड़ी लक्जरी बस के द्वारा हुई। बस 55 यात्रियों से भरी हुई थी। यात्रा बंडील, पश्चिम बंगाल से आरंभ हुई। तत्पश्चात एक रात राजगीर में ठहरने के बाद बस नेपाल के लिए रवाना हो गयी। राजगीर में एक रोमांचित करने वाला स्थल है। वहाँ एक बुद्ध मंदिर है जो ऊँचे पहाड़ पर स्थित है। उस मंदिर में जाने के लिए रोप-वे का सहारा लेना पड़ता है और उसी रोप-वे के माध्यम से वापस भी आना पड़ता है।

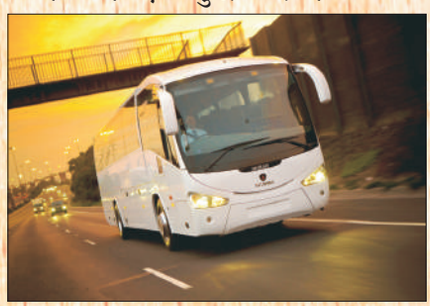

मैं इंट्री पास लेकर रस्सी पर चढ़ने गया तो देखा कि मंदिर जाने के लिए प्रत्येक यात्रियों को एक साधारण खुली कुर्सी पर बैठाया जा रहा था और रस्सी के सहारे ऊपर भेजा जा रहा था। जब मेरी बारी आयी तो मैं कुर्सी पर बैठ गया। उस यात्रा के शुरू होते ही मैं काफी डर गया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि कुर्सी मुझे ऊपर की ओर ले जा रही थी और वहाँ नीचे पहाड़ था जो पेड़ों से भरा हुआ था। यह दृश्य देखकर मैंने अपनी आँखें बंद कर ली। कुछ देर बाद हिम्मत करके मैंने अपनी आँखें खोलीं तो देखा कि बंदरों का एक समूह पेड़ों पर खेल रहा था। मैंने अचानक एक आवाज सुनी जो शायद रस्सी से उत्पन्न हुई थी। मुझे ऐसा लगा कि कुर्सी टूटकर जाएगी ओर मैं नीचे गिर जाऊंगा। उस दिन मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह मेरे जीवन का आखिरी दिन है। भगवान की कृपा से मैं मंदिर पहुँच गया और वहाँ से रस्सी के माध्यम से सही सलामत वापस भी आ गया। मैं इस रस्सी वाले रास्ते की यात्रा से मैं काफी सहम गया था और खुद से यह प्रण भी किया कि भविष्य में इस तरह रस्सी पर लटक कर नहीं जाऊंगा।

चौथे दिन बीरगंज सीमा पर आवश्यक आधिकारिक कार्य करने के बाद हमलोग दोपहर में नेपाल में प्रवेश कर गए तथा पोखरा के लिए रवाना हो गए। अचानक वहाँ आधे घंटे तक मूसलाधार बारिश होती रही। हमलोग रात को 8 बजे एक जगह पर रुककर भोजन ग्रहण किए। मैं इधर-उधर घूम रहा था। वह पूर्णिमा की रात थी। पहाड़ों की सुंदरता देखकर मैं काफी आश्चर्यचकित हो गया। मैं नहीं जानता था कि बारिश होने के बाद पूर्णिमा रात में पहाड़ों की सुंदरता इतनी बढ़ जाती है। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो मैं रूपकथा के साम्राज्य में पहुँच गया हूँ।

हमलोगों के सामने दूसरा खतरा तब सामने आया जब हम पोखरा जाने के लिए मुग्लिंग से बाएँ मुड़े थे। हमलोगों को मालूम पड़ा कि वर्षा के कारण वहाँ भूस्खलन हुआ था और तकरीबन पचास प्रतिशत रोड सेवा बाधित हो गई थी। पचास प्रतिशत से भी कम सड़कें चालू थी तथा उस संकीर्ण सड़क पर आगे बढ़ना जानलेवा था। यदि हमलोग आगे नहीं बढ़ते तो हमें उस वीरान जगह पर रात बितानी पड़ती। काफी सोच-विचार करने के बाद हमारा बस चालक इस जोखिम को उठाने के लिए तैयार हो गया। बस चालक ने हमलोगों को बस से उतरने को कहा और वह अपनी जान जोखिम में डालकर उस बस को अकेले उस संकीर्ण सड़क को पार करने की इच्छा व्यक्त की। अंततः हम सभी बस से बाहर आ गए और पैदल चलकर उस संकीर्ण रास्ते को पार किया तथा हमलोग

सड़क के एक किनारे खड़े हो कर बस के आने का इंतजार करने लगें। हमलोग अपनी-अपनी सांसें थामे बस को उस संकीर्ण सड़क को पार करते देख रहे थे ओर अंत में उस चालक ने अपनी जान जोखिम में डालकर बस को उस सड़क से पार करवा कर उसे सुरक्षित सड़क पर पहुंचा दिया। हम सभी फिर से बस में सवार हुए तथा पोखरा के लिए आगे चल दिये।

हमलोगों ने तीन दिन एवं चार रातें पोखरा में गुजारीं और वहाँ अलग-अलग स्थलों का भ्रमण कर खूब आनंदित हुए। वहाँ सभी स्थलों में से दो स्थल काफी सुंदर थे। उनमें से एड्ड था प्रसिद्ध पोखरा झील। यह खूबसूरत झील पर्वतों से घिरी हुई थी। यह स्थल खेल -संबंधी भी था। पूरे वर्ष विदेशी यात्रियों का यहाँ जमावड़ा लगा हुआ रहता है। यह झील नौका विहार के लिए काफी आकर्षक है। झील में नौका विहार कर रहे सभी अपने आप को किसी फिल्म के अभिनेता एवं अभिनेत्री के समान समझ रहें थे तथा वहाँ का माहौल रोमांस से भरा हुआ था। हमलोगों ने वहाँ डेढ़ घंटों तक नौका विहार का लुत्फ उठाया फिर वापस होटल इस संतोष भरी सोच के साथ लौट आएँ कि हम अपने जीवन में शायद ही इस क्षण को दोबारा महसूस कर पाएंगे।

पोखरा में एक ओर स्थल था सारंग कोट। यह स्थल इसलिए प्रसिद्ध है क्योंकि यहाँ दो पहाड़ों को जोड़ने वाला पुल है। शायद किसी प्राकृतिक आपदा के कारण यह पहाड़ दो खंडों में विभक्त हो गया होगा। हमलोगों को पहले तो लगा कि यह काफी साधारण स्थल है जहां जाने के लिए हमलोगों को 24 किलोमीटर का कष्टदायक सफर करना होगा। तब हमलोग को यह दिखाई दिया कि पहाड़ दो भागों में सीधे ऊपर से नीचे तक विभाजित था। हमलोग आश्चर्यचकित हो गए। हमलोग पुल पर खड़े थे और नीचे देखते ही डर के मारे हमारी घिग्घी बंध गई। वहाँ लगभग 500 फीट नीचे एक नदी बह रही थी। वहाँ नीचे कोई अधिक समय तक नहीं देख सकता था, कुछ ही क्षण उधर देखने के बाद हमलोग अपनी नजरें वहाँ से हटा लेते थे। खैर, जो भी हो लेकिन वह दृश्य आज तक मेरे मानस-पटल पर अंकित है।

पोखरा में भिन्न-भिन्न स्थलों का भ्रमण करने के बाद हमलोग काठमांडू के लिए कूच कर दिये जो वहाँ से 400 किलोमीटर की दूरी पर था। जो भूस्खलन हमलोगों ने देखा था, पोखरा से वापस लौटते समय से गाड़ियों का आवागमन सुचारु रूप से हो रहा था। इस बारह दिन की यात्रा के दौरान मैं कभी भी बस के अंदर वाली सीट पर नहीं बैठा। मैं हमेशा ड्राईवर की कैबिन वाली सीट पर बैठता था। बस यात्रा की प्रत्येक क्षण का मैंने लुत्फ उठाया चाहे वह दिन का समय हो या रात का। पोखरा से काठमांडू का सफर दो भागों में करना था। पहले भाग में हमलोगों ने दो सौ किलोमीटर का सफर तय किया तथा उस भूस्खलन को पार करके मुग्लिंग जंक्शन पहुँच गए। तत्पश्चात हमारी बस रात को मुग्लिंग से काठमांडू की ओर प्रस्थान कर दिया। ड्राईवर के कैबिन में बैठने वाले यात्रियों को कुछ नियमों का पालन करना पड़ता था जैसे उसे कभी अपनी आँखें बंद करने अर्थात सोने की अनुमति नहीं थी तथा ड्राईवर से बातचीत करनी थी ताकि ड्राईवर की आँखें भी न झपकें।

रात्रि बेला में बस आगे बढ़ती जा रही थी। पहाड़ों पर स्थित सड़क कभी ऊपर तो कभी नीचे की ओर थी साथ ही साथ अनेक मोड़ भी थे। लगभग रात के 2:30 बज रहे थे। सभी यात्री बस में सो रहे थे। मैं ड्राईवर से बात का रहा था और वह काफी सावधानी पूर्वक बस चला रहा था। मैं देख रहा था कि ड्राईवर किस तरह से सड़क के हर मोड़ तथा उतार-चढ़ाव को बड़ी कुशलता से पार कर रहा था। मैंने देखा कि जब सड़क नीचे चली जाती थी तब

कोई परेशानी नहीं होती थी। लेकिन जब कभी ऊपर चढ़ना होता था तब बस की गति काफी धीरे हो जाती थी और इस क्रम में ड्राईवर बस का गियर एक-एक करके पूरे चढ़ाव के दौरान बदलता था। इसी तरह से बस ने लगभग आधे घंटे से ऊपर तक का सफर किया था। जब मैं ड्राईवर से बातें कर रहा था तब मुझे प्रतीत हुआ कि ड्राईवर को ऊपर चढ़ाव वाले सड़क पर बस चलाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। उस वक़्त बस के अंदर मौजूद सभी यात्री सो रहे थे और उन्हें इस स्थिति की थोड़ी भी भनक नहीं थी।

अचानक मैंने महसूस किया कि चढ़ाव वाले रोड पर चढ़ते समय हमारी बस गति खो दी। ड्राईवर बस की गति को पुनः प्राप्त करने के लिए बार-बार गियर बदल रहा था। मैंने देखा कि दो गियर बदलने के बाद भी बस ने अपनी गति को प्राप्त नहीं किया और इसके विपरीत बस पीछे की तरफ सरकने लगी। बस को स्थिर स्थिति में लाने के लिए ड्राईवर काफी प्रयास कर रहा था। मैंने महसूस किया कि शायद सभी यात्रियों समेत मेरी जिंदगी का आखिरी दिन है और ड्राईवर का भी। भगवान भी बस को वापस ऊपर चढ़ने में गति प्रदान नहीं कर रहे थे। लेकिन मैंने ड्राईवर से कुछ नहीं बोला और डर से चिल्लाया भी नहीं। मैं सारी गतिविधि को सिर्फ देख रहा था। उस रात ईश्वर की कृपा हमलोगों पर बनी हुई थी। बस लगभग तीन से चार फीट पीछे सड़क गयी थी और अंततः अनेक प्रयासोपरान्त ड्राईवर बस को वापस गति दिलाने में सफल हुआ और बस ऊपर चढ़ने लगी। मेरी भी जान में जान आयी। बस में सोये यात्रियों को इस स्थिति की भनक भी नहीं लगी। हमलोग सुबह काठमांडू पहुँच गए।

अगले दिन दोपहर के भोजन के समय, ड्राईवर ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उस समय डर गया था? बिना कोई उत्तर दिये मैंने ड्राईवर से ही पूछ डाला कि क्या तुम नहीं डरे थे? अंत में उसने विशिष्ट गियर के बारे में बताया। उस समय हमलोग इस विषय पर ज्यादा वार्तालाप नहीं किए। जब हमलोग वापस घर के लिए रवाना हो रहें थे तब सभी यात्रियों को इस घटना का पता चला। खैर जो भी हो, हम सभी ने काठमांडू में काफी मस्ती की। हमलोगों ने कसीनों समेत कई स्थलों का भ्रमण किया। हमलोग ने विशाल मार्केट में ख़रीदारी भी की तथा पशुपति मंदिर में पूजा भी किए। मेरे बैग की चाभी मंदिर में ही गुम हो गयी थी लेकिन भगवान पशुपति की कृपा से मुझे वह चाभी एक मंदिर के एक साधु द्वारा प्राप्त हुई। इस बारह दिन की यात्रा के बाद हमलोग अपने अपने घर सही-सलामत पहुँच गए। यह यात्रा मेरे लिए रोमांच एवं आनंद से भरी हुई थी। मैं इस यात्रा को जीवन भर नहीं भूलूँगा।

रेबती रंजन पोद्दार
लेखा अधिकारी

बालिका वधू

मेरी नानी मुझे बताया करती थी कि उनकी शादी महज आठ साल की उम्र में हो गई थी। मेरे पुछने पर कि नाना की उम्र तब क्या थी ? वह कुछ देर ठहरकर सोचती और फिर कहतीं –"वे मुझसे काफी लंबे थे। करीब एक हाथ लंबे।"

मैं अनुमान लगाता शायद नाना की उम्र तब पंद्रह-सोलह साल रही होगी।

विवाह स्मृति कुरेदे जाने पर नानी कहती-"कुछ खास याद नहीं। उत्सव-सा माहौल था उस दिन।" उनकी स्वप्निल आँखें बयान करती- "उस दिन घर पर काफी मेहमान थे। घर पर कई तरह के पकवान बन रहे थे,पर मुझे खाने की मनाही थी। शाम को मैं थककर सो गई थी शायद। मुझे जगाकर विवाह मंडप में बिठाया गया था।"

नानी की बातें भले ही कौतूहलपूर्ण एवं सरस प्रतीत हों। पर तथ्य यह है कि कच्ची उम्र में विवाहित बच्चियों को अपरिपक्व अवस्था में ही कई अमानवीय अनुभवों से गुजरना पड़ता है। बाल्यावस्था का कटु अनुभव समय के साथ विस्मृत नहीं होता बल्कि यह जीवन पर्यंत सालता रहता है।

भारतीय संस्कृति में विवाह प्रथा विशेष महत्वपूर्ण है। स्त्री-पुरुष को दाम्पत्य सूत्र में बांधने वाली यह रीति अति पवित्र एवं सामाजिक प्रथा मानी जाती है। प्राचीन काल से भारत में विवाह को सोलह संस्कारों में एक माना जाता है। विवाह पारिवारिक जीवन की आधारशिला है, इसके नींव पर ही परिवार, समाज, एवं व्यवस्थाएँ टिकी हैं। विवाह इतना महत्वपूर्ण एवं पवित्र सामाजिक प्रथा होते हुए भी बाल विवाह के कारण अपनी महत्ता खो देती है तथा निर्दोष जिंदगियाँ तबाह हो जाती हैं।

भारत में बाल विवाह पर काफी लंबे अर्से से चर्चा की जा रही है। बाल विवाह उन्मूलन हेतु कई कानून भी बनाए गए हैं। परंतु इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि इस कुप्रथा से भारत अभी तक पूर्णतः मुक्त नहीं हो सका है। गौरतलब है कि बाल विवाह के केंद्र में दो मासूम जिंदगियाँ रहती हैं। खासकर लड़की का जीवन तो बुरी तरह प्रभावित होना तय होता है, अतः इस मसले पर बात करनी चाहिए।

इतिहास के पीले पन्ने पलटें तो औपनिवेशिक भारत में रुख्माबाई राउत का मामला ध्यान में आता है। रुख्माबाई की शादी महज ग्यारह साल में कर दी गयी थी। विवाह के बाद वे मायके ही रही। बाद में रुख्माबाई ससुराल जाने से इंकार कर दिया। इससे सन 1884 से अदालत में इस मामले पर लंबी लड़ाई चली। औपनिवेशिक भारत में पहली बार महिलाओं के अधिकार, बाल विवाह आदि पर खुलकर चर्चा हुई। रुख्माबाई को कई बुद्धिजीवियों का समर्थन मिला। भारत में कानूनन तलाक लेने वाली वह पहली महिला थी। उन्होनें अपनी पढ़ाई जारी रखी। बाद में वह रुख्मा भारत की पहली प्रैक्टिस करने वाली डॉक्टर बनी। रुख्माबाई का संघर्ष इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके परिणामस्वरूप "एज ऑफ कौंसेंट एक्ट 1891" नामक कानून बना तथा विवाह में महिला की सहमति को कानूनन मान्यता मिली।

एक अन्य प्रसंग सन 1889 के एक हृदय विदारक मामले का है। फूलमोनी दासी नामक एक 10 वर्षीया बालिका का विवाह 35 साल के व्यक्ति से हुआ। पति द्वारा जबरन शारीरिक संबंध बनाने यानि बलात्कार के दौरान बालिका वधू की मृत्यु हो गयी। फूलमोनी के पति को हत्या की सजा तो मिली पर उस पर बलात्कार का आरोप

नहीं लगा। इस केस के बाद यौन संबंध हेतु न्यूनतम आयु पर खुलकर चर्चा हुई। विवाह के नाम पर बच्चियों के शोषण के विरुद्ध कानूनन संरक्षण की आवश्यकता महसूस की गई। अतः तत्कालिन न्याय व्यवस्था में यौन संबंध हेतु सहमति की न्यूनतम उम्र 12 साल तय की गयी।

बाल विवाह उन्मूलन हेतु कई समाज सुधारकों ने व्यापक अभियान चलाया। राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज द्वारा समाज में नई जागृति आई। पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती देते हुए नारी की अधिकारों की मानवीय दृष्टि से विवेचना शुरू हुई। इसके अतिरिक्त बाल विवाह के विरुद्ध बेहराम जी मालबारी जैसे समाज सुधारकों द्वारा चलाई मुहिम भी उल्लेखनीय है।

बाल विवाह रोकने के लिए देशी रियासतों की भी अहम भूमिका रही है। इंदौर रियासत ने 1918 में विवाह हेतु लड़के के लिए 14 तथा लड़कियों के लिए 12 साल उम्र किया। राय साहब हरविलास सारदा ने बाल विवाह रोकने के लिए पुख्ता कानून बनाने का प्रयास किया। उन्होनें 1927 में एक विधेयक पेश किया जिसमें विवाह हेतु लड़कों की न्यूनतम उम्र 18 और लड़कियों की न्यूनतम उम्र 14 का प्रस्ताव था। यह विधेयक 1929 में पारित होकर सारदा एक्ट बना। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सन 1978 में इस कानून में संशोधन कर शादी की न्यूनतम उम्र लड़कों के लिए 21 साल तथा लड़कियों के लिए 18 साल तय कर दी गई। साथ ही बाल विवाह को संज्ञेय अपराध बनाया गया। कड़े कानून के बावजूद भारत में बाल विवाह थम नहीं रहे। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण वर्ष (2015-16) के आँकड़ों पर गौर करें तो स्थिति की भयावहता समझ आती है। इस रिपोर्ट के अनुसार पश्चिम बंगाल में 40.7 प्रतिशत, बिहार में 39.1 प्रतिशत, झारखंड में 38 प्रतिशत, राजस्थान में 35.4 प्रतिशत, मध्य प्रदेश में 30 प्रतिशत, महाराष्ट्र में 25.1 प्रतिशत लड़कियों की शादी 18 साल से कम उम्र में ही हो गई थी। कम उम्र में विवाह के कारण बालिकाओं का दैहिक एवं मानसिक शोषण तो होता ही है साथ ही कम उम्र में माँ बनने के कारण उन्हें आजीवन कई समस्याओं से भी जूझना पड़ता है।

समाजशास्त्री बताते हैं कि भारत, बांग्लादेश, नेपाल जैसे देशों में बाल विवाह का मुख्य कारण गरीबी, दहेज प्रथा, सामाजिक असुरक्षा तथा अशिक्षा है। भारत जैसे प्रगतिशील देश में, माता-पिता लड़कियों को 'बोझ' मानने कि मनस्थिति से अभी तक उबर नहीं पाये हैं। माता-पिता कम उम्र में ही लड़कियों का विवाह कर 'दायित्वमुक्त' होना चाहते हैं। छोटी उम्र की लड़कियों के ब्याह में दहेज कम देना पड़ता है। रूढ़िवादी माता-पिता इस भय से लड़कियों की शादी कम उम्र में कर देते हैं कि लड़की विजातीय से प्रेम न कर बैठे। लड़को के माता-पिता छोटी उम्र की बहू को प्राथमिकता देते पाए जाते हैं कारण संभवतः यह होगा कि उसे आसानी से काबू में किया जा सकता है। भारत, नेपाल, बांग्लादेश जैसे एशियाई देशों में संयुक्त परिवार का चलन है। संयुक्त परिवार के कई फायदे हो सकते हैं परंतु यह पारिवारिक व्यवस्था बाल-विवाह को प्रोत्साहन देती है। संयुक्त परिवार में लड़के को अपनी पत्नी एवं बच्चों का उत्तरदायित्व नहीं लेना पड़ता है। परिवार का कोई वयस्क कमाऊ सदस्य भरण-पोषण करता है। अतः छोटी उम्र में विवाह होने पर कोई कठिनाई नहीं होती।

बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीति को स्त्रियों के प्रति मानवीय संवेदना जगाए बिना दूर नहीं किया जा सकता है। अब समय आ गया है कि हम महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, अधिकार एवं स्वतन्त्रता के विषय में पितृसत्तात्मक सोच से ऊपर उठकर सोचें। समाज में व्याप्त दहेज प्रथा, लड़का-लड़की में भेद-भाव, लड़कियों को कमतर मानने की प्रवृति आदि कुप्रथा को दूर किए बिना बाल विवाह रोक पाना मुश्किल है।

चन्दन कुमार
हिन्दी अधिकारी

कराहता बचपन

अभी मैने बोलना ही जाना था,
अपने और परायों में अंतर कहाँ पहचाना था।
जिंदगी कितनी हसीन है, यह जानना अभी बाकी था।
अपनों और परायों को पहचानना अभी बाकी था।

अपनी माँ के आँचल में महफूज होकर सोयी थी,
अपने प्यारे ख्वाबों में बेखबर होकर खोई थी।
न जाने वो पल, वो घड़ी, वो वक़्त भी कितना अजीब था,
नींद में भी पता नहीं क्यों माँ,
तुझसे जब बिछड़ी आखिरी बार मैं रोई थी।

इक नींद की इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी मुझे,
तेरा साया छूटा और अपनी जान गंवानी पड़ी मुझे।
चाह कर भी तेरे पास अब ना आ पाऊँगी।
कौन जानता है, माँ!
फिर कितनी पीड़ा उठानी पड़े मुझे।

मुझे पता है कितने दर्द से करना है सामना तुझे
माँ! तू कमजोर न पड़ना, कुछ भी हो पर इंसाफ दिलाना मुझे,
जिन्होंने मुझसे मेरी साँसे छीनी है, उन्हें भी जीने का कोई हक़ नहीं,
मुझे न्याय दिला देना माँ, बस यही आखिरी कसम है तुझे,
बस यही आखिरी कसम है तुझे।

मैं जानती हूँ, इंसानी रूप में ये दरिंदा है,
मासूमों को नोच खाने वाला राक्षसी परिंदा है।
अपनी औलाद की रक्षा न कर सकी, ओ मेरी लाडली,
बस इतना है कहना कि, भारत माँ आज फिर शर्मिंदा है।
भारत माँ आज फिर शर्मिंदा है।

आस्था गुप्ता
लेखाकार

केदारकंठ ट्रेक

शीतकालीन ट्रेक के लिए केदारकंठ पहाड़ लोकप्रिय है। केदारकंठ उत्तराखंड राज्य के उत्तरकाशी जिले में है। केदारकंठ, मतलब भगवान शिव का कंठ। कहते हैं कि कुरूक्षेत्र के युद्ध के बाद पांडव भगवान शिव से आशीर्वाद लेने के लिए हिमालय गए थे। परंतु भगवान शिव उनसे मिलने के लिए प्रकट नहीं हुए। बल्कि वे भैंस के छद्मवेश में पांडवों को गुमराह करने लगे। भैंसों का झुंड देखकर भीम ने एक चाल चली। वह भैंसों के जानेवाले रास्ते पर दो चट्टानों के ऊपर दोनों पांव रखकर खड़े हो गए। भैंसे भीम के दोनों पांव के बीच से गुजरने लगें पर एक भैंस ने ऐसा करने से इनकार किया तो भीम के साथ लड़ाई हो गई। भीम ने उसे टुकड़े- टुकड़े करके बिखेर दिया। जहां-जहां वह टुकड़ा गिरा पांडवों ने वहाँ-वहाँ मंदिर बना दिये। जैसे कल्पेश्वर – यहाँ भगवान शिव का बाल गिरा था, रूद्रनाथ – यहाँ चेहरा गिरा, तुंगनाथ – यहाँ बाहें /भुजाएं गिरी थी, मध्यतमहेश्वयर – यहाँ नाभि गिरा एवं पशुपतिनाथ – यहाँ पीठ गिरा था।

हमने जनवरी 2019 को केदारकंठ जाने का कार्यक्रम बनाया। यह ट्रेक उत्तरकाशी जिले की संकरी गांव से शुरू होती है। मेरे मित्र विश्वरूप ने अपने दोस्तों और जान-पहचान वाले लोगों का एक ग्रुप बनाया। संकरी के गाइड से बात-चीत करके आवश्यक सभी शर्तें एवं सामग्री के बारे में सभी कार्रवाई अक्तूबर 2018 में ही पूरा कर लिया गया था। यात्रा का दिन 4 जनवरी 2019 तय हुआ। इस ट्रेक में ट्रेकिंग शुरू होने से पहले संकरी तक की यात्रा मौसम के कारण कुछ कम रोमांचक नहीं था।

कार्यक्रम के अनुसार हम सभी 04 जनवरी 2019 को हावड़ा स्टेशन पर अपराह्न 4.00 बजे एकत्रित हुए। ट्रेन 5.30 बजे थी। हालांकि ट्रेन का सही समय दोपहर 1.00 बजे था। पर डाउन ट्रेन देर से आने के कारण परिवर्तित समय पर खुली। यह जानकारी हमें पहले से ही रेलवे की डिजिटल सूचना व्यवस्था के माध्यम से मिल गई थी। करीब 5.00 बजे ट्रेन प्लैटफ़ार्म पर लग गई। हम सब ट्रेन में चढ़कर अपने सभी सामान का ठीक-ठाक बन्दोबस्त

कर लिया। 5.30 बजे ट्रेन चल पड़ी। हम सब गप-शप में लीन हो गए। ट्रेन पूरी यात्रा पथ में समय का समायोजित नहीं कर पाई बल्कि और भी विलंब के साथ दूसरे दिन रात को करीब 10.00 बजे हरिद्वार पहुंची। हमलोगों ने हरिद्वार में पहले ही होटल बुक कर लिया था। अतः वहाँ रहने के लिए किसी भी समस्या का सामना नहीं करना पड़ा।

दूसरे दिन सुबह खान-पान के कुछ सामान खरीद कर 10.30 बजे एक बलेरो गाड़ी से संकरी के लिए रवाना हुए। रास्ते में देहरादून में बाकी कुछ और सामान खरीदें और फिर चल पड़े। देहरादून, मसूरी होकर आगे चलते रहे। इसी रास्ते में राजाजी अभ्यारण है। मौसम साफ नहीं था। कभी धूप, कभी छांव। मसूरी के बाद हमने एक ढाबे में दोपहर का खाना खाया। हमलोग पहाड़ों का नजारा देखते और आनंद लेते हुए आगे बढ़ते रहे। पर इस आनंद में मौसम ने कुछ बाधा लेकर आया। दिन ढ़लता गया और मौसम भी खराब होता गया। आसमान धीरे-धीरे बादलों से भर गया। नगांव तक पँहुचते पँहुचते शाम हो गई थी। कुछ-कुछ बूँदाबाँदी भी शुरू हो गई थी। हम आगे बढ़ते गए और साथ–साथ बारिष भी थोड़ी-थोड़ी तेज होती गयी। दूर पहाड़ों में जुगनु की तरह बस्तियाँ दिखाई दे रहा था। वह पुरोला जनपद था। बारिश/बरसात जारी था। ऐसी स्थिति में हम पुरोला पार कर लिए।

रात हो चुकी थी। पुरोला पार करने के बाद चारों ओर अंधेरा था। रास्ते में कभी-कभार एक-आध वाहन देखने का मिल रही थी। कुछ देर बाद बारिश का प्रकोप कम हुआ। हमारे एक साथी को उल्टी आ रही थी तो गाड़ी रोका गया। तभी विपरीत दिशा से एक कार आकर रूकी और उसके चालक ने हमसे पूछा कि हम कहाँ जा रहे हैं। संकरी जा रहे है सुनकर उन्होंने कहा कि आगे बारिश के साथ भारी हिमपात हुआ है। उसके कारण वे आगे नहीं जा पाए और लौट आ रहें हैं। उनकी गाड़ी की डैसबोर्ड में भी ताजा बर्फ जमा हुआ देखने को मिला। उन्होंने यह भी कहा कि अभी बारिश रूकी तो शायद हिमपात भी रुका होगा। आगे चलकर देख सकते हैं। यह सुनकर हमारी आशंका सच साबित हुई। मौसम की जानकारी से बारिश-हिमपात होने का संभावना हमें ज्ञात थी। हिमपात अगर जारी रहा तो संकरी पँहुचना कठीन होगा। हमारा कार्यक्रम भी बाधित होगी। शंका के साथ एडवेंचर का अनुभव पाने का जोश भी मन में हो रहा था। हम आगे बढ़ते रहे। सामने और भी 2-4 गाड़ियों के चालकों से बात हुई और उन्होनें भी वही बात दोहराई। एक ट्रक चालक ने तो आगे कहीं ठहरने की सलाह दी। हम भी यह सोचकर आगे चलते रहे कि कहीं जगह मिले तो ठहर जाएंगे। परंतु कोई गांव या जनपद नजर नहीं आ रहा था। एक माइलस्टोन पर देखा मोरी गांव 10 कि.मी.। लेकिन मोरी गांव में एक-दो टिमटिमाती बत्ती के अलावा ऐसा कुछ नजर नहीं आया कि हम ठहर सकें। गाड़ी चलती रही। अंधेरे में कुछ पता नहीं चल रहा था। मोबाइल नेटवर्क भी ठीक से मिल नहीं रहा था। हम गुगलमैप के जरिए दिशा निदेश तथा दूरी का पता लगा रहे थे। हम उस जगह पर आ गए थे जहां से हिमपात शरू हुआ था। रास्ते पर गिरा हुआ बर्फ बढ़ता ही गया। बारिश फिर से शुरू हो गई। कुछ देर बाद हिमपात भी शुरू हो गया। आगे और कोई गांव या जनपद नजर नहीं आ रहे थे।

हमारा चालक सावधानी से आगे बढ़ता रहा। दूर-दूर तक कहीं कोई रोशनी नहीं दिखाइ दे रही थी। चिंता और रोमांच दोनों ही मन को व्यग्र कर रहे थे। किसी से पूछ-ताछ करने का भी कोई अवसर नहीं मिल रहा था। तभी एक जगह हेड-लाइट की रोशनी में बर्फ में ढ़की हुई 2-4 गाडियाँ और मकान दिखाई दी। चालक ने गाड़ी रोककर पूछ-ताछ की तो पता चला कि वह

जगह संकरी है, हमें जहां पहुँचना था। हम सब गाड़ी से उतरे। रास्ता बर्फ में पटा हुआ था। यह भी पता चला कि बारिश और हिमपात के कारण बिजली गुल हो गई और 2-3 दिन लगेंगे ठीक होने में।
शायद उसी कारण हम मोबाइल पर होटल मालिक से संपर्क नहीं कर पा रहे थे। अपना-अपना सामान लेकर हम कमरे में घुस गए। बाहर ठंड बहुत थी। रात को 10.00 बज चुके थे। जो जेनेरेटर चल रहा था वह बंद कर दिया गया। हमने मोम बत्ती के प्रकाश में खाना खाए और सो गए।

थकान की वजह से मुझे नींद आ गई थी। परंतु मुझे जल्दी उठने की आदत है और नई जगह पर नींद बार-बार टूटती रहती है। रात 3:30 बजे करीब एक बार नींद टूटी तो उठकर एकबार बाहर का नजारा देखने निकला। आसमान लगभग साफ था। कुछ तारे दिखाई दे रहे थे। शांत बर्फिल वातावरण बहुत सुंदर और स्वपनिल लग रहा था। ठंड तो थी ही। मैं वापस बिस्तर पर आ गया। लेट गया पर नींद न आई। कुछ देर बाद उठकर प्रातकृत्य संपन्न कर लिया। फिर बाहर निकला। देखा रास्ता, मकान की छत, गाडियाँ सबकुछ सफेद बर्फ की चादर से ढका हुआ है। जैसे वे चादर ओढ़कर सो रहे हैं। रास्तें में बर्फ जमकर स्वच्छ शीशे की तरह सख्त हो गई थी। बरामदा से उतरकर थोड़ा इधर उधर टहलते रहे। सड़क किनारे,पहाड़ों पर सभी पेड़ सफेद थे। बीती रात को हुई तुषारपात के कारण चारों ओर का यह मनोरम, अपूर्व दृश्यथ देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऐसे दृश्य देखने को और प्रत्यक्ष करने की बहुत दिनों की तमन्ना पूरी हुई। सब कुछ तस्वीर जैसी लग रही थी। इस तस्वीर को निहारने के लिए ही तो आए हैं। देखने के आनंद में तस्वीर लेना कम हो रहा था। क्योंकि मन व नयन जो देख पा रहा है वह तो लेंस नहीं देख सकता है। डिजिटल दुनियाँ में तो तस्वीर की कमी नहीं है, तस्वीर के अंदर रहकर तस्वीर को देखने का मज़ा ही कुछ और है। थोड़ी देर में होटल लौट आएँ।

गाइड के साथ बात-चीत करके कार्यक्रम की अंतिम रूप-रेखा तैयार की गई। गाइड ने कहा कि भारी हिमपात के कारण सभी कैम्प-साइट पर नया तंबु लगाना मुश्किल है। केदारकंठ चोटी से लौटने के रास्ते पर उनका पहले से कैंप लगा हुआ है। अतः हम जाने के रास्ते के बदले उस लौटने के रास्ते से जाएंगे और लौटंगे। उस हिसाब से हम आवश्यक सामग्रियों के साथ तैयार हुए। 8.00 बजे के करीब हमने यात्रा शुरू की। बर्फ से ढकी हुई पगडंडी से चढ़ना शुरू किया। बर्फ के कारण कहीं भी मिट्टी नहीं देख पा रहे थे। गाईड के पदचिह्न का अनुसरण करते हुए और चारों ओर का मनोरम दृश्य का आनंद लेते हुए आगे बढ़ते रहे। साथ ही रूक-रूक कर तस्वीरें भी लेते रहे। अमित और गौरव पहली बार ट्रेक के लिए आए थे। ऐसे दृश्य को देखकर बहुत ही प्रफ़्फुलित थे। उनका जोश तो देखने लायक था। चलते-चलते मैगी प्वांइट आया। चाय और मैगी के साथ थोड़ा आराम कर लिया गया। फिर चढ़ाई शुरू हुई। दोपहर के बाद हम कैंप साइट हरगांव पँहुचे। मौसम पूरा साफ नहीं रहा। धूप -छांव के खेल में कुदरत का नजारा देखते-देखते दिन बीत गया। शाम को चाय के बाद सब मिलकर नाच-गाना करके शरीर को गरम कर लिया।

रात को 8.00 बजे खाना खा लिया। टेंट के बाहर तो कुछ करना नहीं था। बर्फ ही बर्फ था। जितना गर्म कपड़े लिए थे सभी ओढ़ कर मैं अपने टेंट-पार्टनर विश्वरूप के साथ थोड़ी गप-शप की। कुछ समय बिताया और स्लिपिंग बैग में घुसकर लेट गया। रात का तापमान माइनस 13 डिग्री सेलसियस से नीचे आया था। ठंड के कारण नींद ठीक से पूरी नहीं हुई। सुबह हुआ तो टेंट से बाहर निकल कर देखा कि मौसम वैसा ही था। पूरा साफ नहीं था। चाय और नास्ता कर 8.00 बजे तैयार होकर बेस कैंप जाने के लिए निकलें और संभव हो तो चोटी पर जाने के लिए। बादल छाए हुए थे। मौसम की स्थिति देखकर थोड़ी घबराहट हो रही थी पर अनदेखे-अनजाने का आकर्षण

उससे बहुत तीव्र था। अतः चल पड़े। घुटनों तक के बर्फ ठेलते हुए आगे बढ़ते रहे। यह पड़ाव लम्बे–लम्बे पाइन और फर के पेड़ों से भरा जंगल था। छोटे-बड़े सभी पेड़ जैसे बर्फ की चादर ओढ़कर खड़े है। कभी हवा झोंका आता है तो पत्ते पर जमा बर्फ बारिश की तरह झरने लगते है। एकबार जोर से आवाज लगाई तो देखा उसकी प्रतिध्वनि से भी पेड़ से बर्फ गिरता है। इससे तो और मजा आ गया। ऐसी सब दृश्य का आनंद व तस्वीर लेते हुए चलते रहे। टीम लिडर प्रदीप दा आगे-आगे थे। 11 बजे करीब हम बेस कैंम्प साइट पर पहुँचे। देखा सभी टेंट बर्फ में आधा डूबा हुआ है। एक टेंट में कई आदमी दिखाई दिए। वे ट्रेक करने वाले नहीं थे। कोई गाइड व गांव वाले थे। उनसे पता चला कि उपर बर्फ कमर तक हो सकता है और आज चढ़ना मुश्किल होगा। प्रदीप दा तो फिर भी जाने को तैयार थे। पर उस समय दूर चोटी पर मौसम और खराब होते दिखाई दे रहा था। पहाड़ का अपना नियम-कानून है। वहाँ वही चलता है एवं उसी के अनुसार चलना ही शर्त है। अपना मर्जी को हर कदम नियंत्रण में रखना आवश्यक है। अन्यथा कुछ भी हो सकता है। जाने का मन तो हो रहा था परंतु मौसम के कारण हमारा गाइड तैयार नहीं था और बेस कैंप पर ठहरने के लिए सामान भी नहीं लाए थे। अतः उतरना ही था। सब मिलकर फोटो लिया। उसके बाद उतरने लगे। एक जगह स्लिप करने के अच्छा ढलान देखकर सब बच्चे हो गए। विश्वरूप तो उनके कैमरे में धीर-गति से फोटो लेने लगे। ऐसे मौज-मस्ती में हरगांव पँहूचे। फिर टेंट और समान पैक-आप कर संकरी के लिए उतरने लगे। नीचे बर्फ पिघल जाने के कारण कहीं-कहीं कीचड़ निकल आया। अतः ज्यादा सावधान होना पड़ा। हमलोग शाम को 5.00 बजे तक सकुशल संकरी लौट आएँ।

नबेन्दु दाशगुप्त
सहायक लेखा अधिकारी

तुम्हें आगे बढ़ना होगा

तुम्हें आगे बढ़ना होगा,
अपना भाग्य तुम्हें बदलना होगा।
आएँगी मुश्किलें और रुकावटें कई,
पर इन सभी को पार कर,
तुम्हें आगे बढ़ना होगा।

आए जीवन में चाहे कितनी ही कठिनाईयाँ,
मन में दृढ़ संकल्प लिए
तुम्हें डटे रहना होगा,
अपना भाग्य तुम्हें बदलना होगा
तुम्हें आगे बढ़ना होगा।

अपने लक्ष्य को यूँ तुम पा जाओगे,
बस उल्टी लहरों से तुम्हें लड़ना होगा
चाहे राहें कितनी ही दुर्गम हो,
तुम्हें आगे बढ़ना होगा।

तोड़ कर सभी बंधनों को निर्भयता से कदम बढ़ाना होगा,
कोई और न बदलेगा निज भाग्य को,
तुम्हें खुद ही इसे बदलना होगा,
तुम्हें आगे बढ़ना होगा ।

गाँव या शहर हो, देश या विदेश हो,
इन सभी सीमाओं से निकलकर
तुम्हें हर क्षेत्र में अपना स्थान बनाए रखना होगा ।
स्वयं को सशक्त कर देश का सम्मान बढ़ाते रहना होगा,
तुम्हें आगे बढ़ना होगा ।

रात के अंधेरे को सूरज की एक किरण हराती है,
आओ तुम भी बनो उज्ज्वल ये उन्नति तुम्हें बुलाती है ।
व्यर्थ के जंजालों और भाग्यवाद से तुम्हें परे रहना होगा,
तुम्हें आगे बढ़ना होगा ।

जितेंद्र शर्मा
(वरिष्ठ लेखाकार)

हिन्दी दिवस 2019 के अवसर पर दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम
का शुभारंभ करतीं प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) महोदया।

हिन्दी दिवस-2019 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री के संदेश का पाठ
करते हुए उपमहालेखाकार (प्रशासन) श्री राहुल कुमार।

दैव-दैव आलसी पुकारा

मानव संसार का श्रेष्ठ प्राणी है। यह श्रेष्ठता उसने निरंतर प्रयास, कर्मठता, दृढ़ता और मेहनत के बल पर हासिल की है। मानव अपने बाजुओं की शक्ति, कुछ कर गुजरने के संकल्प और विकट स्थिति से भी लोहा लेने की दृढ़ इच्छा के कारण ही आज धरती का हर कोना नाप आया है। लेकिन मेहनतकश को यहाँ भी आराम नहीं है। अतः वह तीव्रता के साथ अन्तरिक्ष तक अपना पैर फैला रहा है। इसके ठीक विपरीत इसी धरा पर ही कुछ ऐसे आदमजात भी हैं, जो भाग्य को ही अपना सर्वस्व मानकर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। वे भाग्य के लेखे पर ही अपने आप को न्योछावर करते हैं । ऐसे लोगों के लिए तो कवि मलूक दास की पंक्तियाँ ही रसश्रोत है- "अजगर करे ना चाकरी, पंछी करे न काम। दास मालुका कह गए, सबके दाता राम।" लेकिन आज यह सर्वविदित है कि अजगर हो या पंछी सबको प्रयास करना ही पड़ता है अपनी आजीविका के लिए। राम ने हमे जीवन अवश्य दिया है, लेकिन इस जीवन को सुंदर और सार्थक बनाने की ज़िम्मेदारी मनुष्य के कंधे पर है, जिसका निर्वाह श्रम, लगन, मेहनत और प्रयास के बिना असंभव है। इस उक्ति को एक लघु कथा के द्वारा आसानी से समझा जा सकता है।

किसी गाँव में तीन मित्र थे - धनपत, खेलावन और रामवृक्ष। धनपत थोड़ा मेहनती और समझदार था, लेकिन खेलावन और रामवृक्ष को तो जैसे कामचोरी में डिग्री हासिल थी। दिनभर आम के बगीचे में गमछा बिछाकर पूरब से आने वाली हवा का आनंद लेते रहते थे। अगर भूख लगती तो धनपत को उठाते हुए खेलावन कहता "जाकर घर से दो-चार रोटियाँ ले आ, भूखे पेट अब हवा अच्छी नहीं लग रही।" जैसे ही धनपत बगीचे से बाहर निकलता रामवृक्ष चिल्लाता- " अरे ओ धनपत ! पानी लाना मत भूलना, वरना प्यासे मर जाएंगे।" धनपत बहुत गरीब परिवार से था, इसलिए दौड़-दौड़ कर उनके आदेशो का पालन करता था, बदले में उसे भी कुछ निवाले मिल जाते थे। लेकिन कभी-कभी वह पूछ बैठता- " भाईयों अगर मैं हमेशा के लिए कहीं चला गया तो तुमलोगों को रोटी-पानी कौन लाकर देगा?" यह सुनकर ही वे ज़ोर से ठहाका मारते और कहते- "भाई मेरे! तू बहुत भोला है। भगवान ने जैसे तन और प्राण दिया है, वैसे ही रोटी-पानी की व्यवस्था भी करेगा।"

खैर धनपत की बात सच हुई। दोनों के माँ-बाप ने उनके आलसी स्वभाव से तंग आकर उन्हें घर से निकाल दिया। धनपत को भी उनकी मित्रता का नुकसान उठाना पड़ा और वह भी बेघर हो गया। लेकिन उसने यह संकल्प लिया कि वह इन दो आलसियों के साथ नहीं जाएगा। अब वह खूब मेहनत करेगा और अपने माथे से आलसी का दाग मिटा देगा। इस संकल्प के साथ उसने अपनी मोटरी उठाई और आगे चलते बना। खेलवान और रामवृक्ष की घिग्गी बंध गई थी। किसी तरह माथे पर दो कपड़ों का बोझ उठाए हतास मन से गाँव की सरहद को पार किया। कड़ी धूप में उन्हे आम के बगीचे, माँ के हाथों की नर्म रोटी और शीतल जल के मटके याद आने लगे। थोड़ी ही दूर बढ़ने पर उनका आलसी बदन थक गया। पसीने से लथपथ दोनों ही पास के एक घने जामुन के पेड़ के

नीचे लेट गए। पेट में चूहे कूद रहे थे और पेड़ पर ढेर सारे जामुन के फल लदे थे। लेकिन स्वभाव के अनुरूप किसी ने भी उन्हे तोड़ने की जहमत नहीं उठाई। खैर दुख और दर्द के बोझ से दुहरा बदन तुरंत ही नींद की आगोश में समा गया। थोड़ी देर बाद अचानक नींद खुली तो रामवृक्ष ने देखा कि दो बंदर पेड़ से उतरकर खेलावन के गालों पर थप्पड़ रसीद कर रहे हैं और खेलावन चुपचाप दर्द सहता जा रहा है। बंदरों का मन जब इस क्रिया से भर गया, तो वे फिर पेड़ पर चढ़ गए। तभी रामवृक्ष को अपने

सीने पर कुछ भार सा महसूस हुआ। उसने आंखे नीची करके देखा तो उसकी छाती पर जामुन का एक गुच्छा गिरा पड़ा है। उसने खेलावन से कहा- "भाई खेलावन ! मुझे भूख भी लगी है और मेरा सीना इस जामुन के भार से दबा भी जा रहा है। जरा मेहरबानी करके इस जामुन को मेरे मुंह में खिला देते तो बहुत अच्छा होता। " इतना सुनना था कि खेलावन तैश में आ गया और बोल पड़ा- "करीब आधे घंटे तक बंदरों ने मेरे गाल का फ़ालूदा बनाया, तब तो तुमने उन बंदरों को नहीं भगाया और

अब कहते हो कि जामुन खिला दो।" खेलावन धीरे से बोला- अब भगवान ने जब फल सीने तक गिराया है, यदि यह जामुन मेरे भाग्य में लिखा होगा तो अपने आप ही मेरे मुंह तक आ जाएगा। रामवृक्ष धीरे से बुदबुदाया –" ठीक कहते हो भाई।"

लगभग तीन महीने गुजर चुके थे। इस दौरान धनपत शहर चला गया था। उसने किसी गोदाम मे मुंशी का काम पकड़ लिया था। कुछ पूंजी इक्कट्ठा कर वह अपने गाँव आया तो पता चला कि उसके दोस्त अब तक घर नहीं आए हैं। उनकी तलाश में वह जंगल के रास्ते जाने लगा। जैसे ही कुछ दूर आगे बढ़ा उसे जामुन का पेड़ दिखा। उसके नीचे उसने दो लेटे हुये कंकाल देखे, जिसने सीने पर जामुन सुख रहे थे। धनपत अपने आप से कहने लगा- "दैव-दैव आलसी पुकारा।"

आनंद कुमार पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

मैं कुछ कहना चाहती हूँ

मैं कुछ कहना चाहती हूँ।
खामोशी भरे दिन और चुप सी रातें
खामोशियों में छुपी कुछ गहरी सी बातें
बातों को फ़लक पर उकेरना चाहती हूँ।
मैं कुछ कहना चाहती हूँ।

पुकारता है कोई मुझे बादलों के उस पार से
खींचता जाये मन मेरा, अनजानी पुकार से
बाँध लिया हो जैसे उसने मुझे
अनदेखे कोई तार से
पर लगाकर अपने सपनों के
दूर उन बादलों के पार जाना चाहती हूँ।
मैं कुछ कहना चाहती हूँ।

कभी-कभी बस यूँ ही
झरनों सा बन, मन बहा चला जाता है
निर्विकार, निर्विरोध....
यादों के तूफान आया करते हैं, मन के किनारों पर
बीते लम्हों के पत्थरों से टकराते
चोट खाते, कभी गिरते, कभी संभलते
उन यादों को तलहटी में दबाकर
खामोश नदियों सी बहना चाहती हूँ।
मैं कुछ कहना चाहती हूँ।

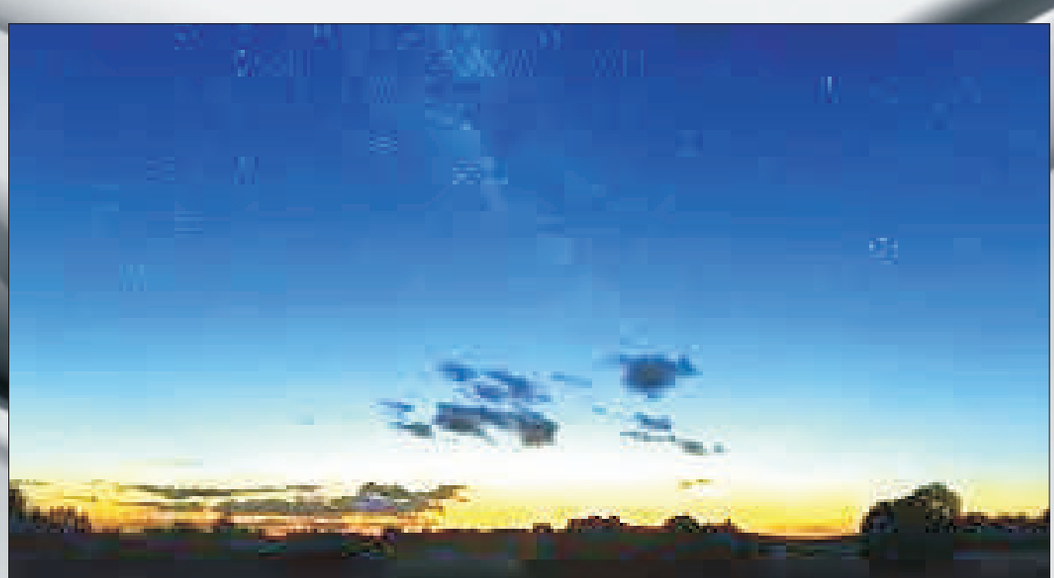

आरती शर्मा
एम.टी.एस

घर जमाई

आजकल समाज में घर जमाई होना आम बात हो गई है। वैसे माता-पिता जिन्हें केवल एक बेटी होती है, उनके द्वारा अपनी बेटी की शादी के लिए घर जमाई की ही खोज होती है। कभी-कभी तो धन-दौलत के लालच में भी लोग घर जमाई बनते हैं चाहे उनकी पत्नियाँ एकलौती हो या नहीं। हमारे समाज की प्रथा रही है कि बेटी की शादी के बाद उसका ससुराल ही उसका अपना घर होता है। यह जो कहानी है वो इसी विषय पर आधारित है।

बात लगभग 15 साल पुरानी है। सूरज अपने माता-पिता का एक मात्र पुत्र है। सूरज की दो बहनें भी है। सूरज के माता-पिता अपनी बड़ी बेटी सीता की शादी को लेकर काफी चिंतित रहते हैं। सूरज के पिता एक बड़े जमींदार हैं। वे अपने गाँव की मुख्य सड़क के किनारे बड़ा सा मकान भी बना रखे हैं। जिसमें नाना-प्रकार की दुकानें खुली हुई हैं। ऊपर की मंजिलों पर रहने के लिए फ्लैट बना हुआ है जिसमें किरायेदार रहते हैं। इस तरह से इनके घर में लगभग दो लाख प्रतिमाह आमदनी हो जाती है। ठीक इसी प्रकार सूरज के चाचा का भी मुख्य सड़क के किनारे बड़ा सा मकान है और उनको भी दो लाख प्रतिमाह की आमदनी हो जाती है। सूरज के पापा एवं चाचा में पूरी तरह से बंटवारा नहीं हुआ है। सूरज के पिता काफी गरम मिजाज के हैं। वे हमेशा अपने छोटे भाई को बुरा- भला कहते रहते हैं। दोनों परिवारों में बनती नहीं है। हालांकि सूरज के चाचा काफी अच्छे विचार के हैं। वे अपने भाई की बेटियों को ज्यादा प्यार करते हैं। सीता और गीता भी अपने चाचा को काफी मानती है। सूरज के चाचा को भी एक बेटा तथा तीन बेटियाँ हैं लेकिन वे अभी उम्र में काफी छोटे हैं। सीता की शादी का जिम्मा उसकी माँ पर है। सीता की माँ चाहती है कि सीता की शादी किसी बड़े घर में हो। सीता की माँ का मायका किसी गाँव में है। उसे खेती-बाड़ी की काफी समझ है। उसके अनुसार जिस किसान के पास अधिक जमीन है ओर फसल ज्यादा पैदा करता है तब वही इंसान धनी है। वह सरकारी नौकरी करने वाले लोगों को अमीर नहीं समझती है। इस वजह से सीता की शादी किसी किसान के यहाँ ही करने की बात चल रही है।

एक दिन सीता की माँ को याद आती है कि उसके मायके में एक बड़ा किसान है। उसके तीन बेटे हैं। वह सोचती है अब तो वे लोग शादी करने लायक हो गए होंगे। फिर क्या था सीता की माँ सारी बातें पता करने में लग गई। पता करने पर मालूम हुआ कि अभी किसी बेटे की शादी नहीं हुई है। सूरज के पिता को मनवाने के लिए उसने उस किसान की काफी बढ़ चढ़कर तारीफ की। साथ ही साथ उसे काफी धनी भी बताया। किसी तरह से घर के सभी सदस्य शादी के लिए राजी हो गए।

एक निश्चित दिन सभी लड़के वाले के घर पहुँचते हैं। लड़का देखने के बाद लेन-देन की बात होती है। दोनों परिवार वाले मिलकर खुशी-खुशी सीता और धीरेंद्र की शादी कर देते हैं। सीता की विदाई होती है। अपने घर से निकलने के बाद सीता रास्ते में अपने ससुराल के बारे में सोचती है। वहाँ घर कैसा होगा ? वहाँ की सड़क कैसी होगी ? वहाँ के लोग कैसे होंगे ? इस तरह के कई प्रश्न उसके मस्तिष्क में उत्पन्न होते थे। अब सीता अपने ससुराल पहुँचती है। वहाँ की सड़कें कच्ची हैं। सीता जब घूँघट के अंदर से देखती है तो

उसे कर्कट का घर दिखता है जो सजा हुआ था। सीता के आँखों आगे अंधेरा छा गया। खुद को संभालते हुए वह घर के अंदर प्रवेश करती है। वह देखती है वहाँ लोग भी जैसे-तैसे गंदे कपड़ों में हैं। इस तरह से वह अपने ससुराल में पहला दिन गुजारती है। अब इसे यहीं पर अपना जीवन बिताना है।

सीता का पति धीरेंद्र काफी लालची है। उसने दहेज के नाम पर काफी धन और सामग्री सीता की माँ से प्राप्त किया है। धीरेंद्र अपने खेतों में नाना-प्रकार के फसल लगाता है। घर में उपयोग किए जाने वाले आवश्यक वस्तुओं पर उसका ध्यान नहीं रहता है। घर में गैस होने पर भी वह सीता को लकड़ी जलाकर खाना बनाने के लिए बोलता था। सीता ना चाहते हुए भी लकड़ी से खाना बनाती थी। उस गाँव में बिजली भी नाम मात्र की थी। मुश्किल से चार-पाँच घंटे ही बिजली रहती थी। कहाँ सीता पहले ए.सी में रहा करती थी, अब उसे मानो काले पानी की सजा हो गई हो। धीरेंद्र के मन में शादी के समय से ही एक योजना तैयार हो रही थी। उसकी नजर सीता के मायके की संपत्ति पर थी। वह जान बूझकर सीता से काफी काम करवाता था। वह इस आशा में था कि किसी भी तरह से सीता अपने मायके चली जाए और यहाँ कभी आने को ना कहे। सीता भी आखिर कब तक सहती। उसने एक दिन मन बना लिया कि अब यहाँ नहीं रहेगी। वह अपने मायके चली आई। कुछ दिन के बाद धीरेंद्र भी वहाँ पहुँच जाता है। वह अपने ससुराल वालों को दलील देता है कि अब वो खेती नहीं करेगा। यहीं पर रहकर प्राइवेट में काम करेगा। इस तरह से धीरेंद्र ने अपने पाँव अपने ससुराल में जमाये।

धीरेंद्र अब अपने ससुराल में ही रहता, वहाँ का खाना खाता। उसने अपने ससुर से दो कमरे वाला फ्लैट लिया। फ्लैट लेने के बाद उसे एक चीज की कमी प्रतीत होती है। उसे दहेज में एलसीडी टीवी भी मिला था। जिसे उसने अपने घर में लगा रखा था। वह रोज सीता से बोलता है कि एक टीवी होता तो थोड़ा मनोरंजन होता। फिर क्या था बात जब सीता के पिता को मालूम पड़ी तो उसने ना चाहते हुए भी फिर से एक एलसीडी टीवी खरीद दिया।

समय बीतता चला गया। सीता को एक लड़का होता है। धीरे धीरे वो अब स्कूल भी जाने लायक हो गया। अब धीरेंद्र एक बार फिर से अपनी चाल चलता है। वह अपने बेटे को किडज़ी स्कूल मे नामांकन करवाना चाहता है। उसके पास पैसे भी हैं। वह अपने खेतों को किसी अन्य किसान को खेती करने के लिए दिया था। वह लगभग रुपये 4 लाख सालाना अपने खेत के किराये से प्राप्त कर लेता था। यह बात उसने सीता को भी नहीं बताई थी। वह अपने ससुर के पास जाकर ढोंग करता है कि प्राइवेट नौकरी से उसे केवल रुपये 8000/- प्रतिमाह मिलता है। किडजी स्कूल में नामांकन में ही लगभग 20-25 हजार रुपये लग जाएंगे। स्कूल की मासिक फीस भी लगभग रु 3000/- प्रतिमाह तक होंगे। ऐसे में वह चाहकर भी अपने बेटे को किडजी में नहीं पढ़ा सकता। फिर क्या था उसके ससुर ने शिक्षा के नाम पर अपने नाती का खर्च देने के लिए तैयार हो गए। इस तरह से धीरेंद्र अपनी हर चाल को सही ढंग से अंजाम दिये जा रहा था।

इसी बीच सीता के भाई सूरज की शादी हो जाती है। सूरज की पत्नी, गरिमा काफी चतुर महिला है। खासकर जब बात धन-दौलत की हो। गरिमा के आ जाने से धीरेंद्र की मुश्किलें बढ़ गई। अक्सर उन दोनों में तू-तू मैं-मैं होने लगी। घर वाले भी परेशान हो गए थे। धीरेंद्र के मन में अभी कुछ इच्छाएँ थी। वह सोचता है किसी भी तरह से इसी क्षेत्र में सड़क के किनारे जमीन मिल जाए। वह पता भी कर लेता है कि उसके ससुर के पास इस तरह

सड़क के किनारे बहुत सारी ज़मीनें हैं। फिर क्या था वह अब अपनी योजना को सफल बनाने में लग गया। इसी क्रम में, वह सीता से काफी लड़ने लगा। कभी-कभी तो वह सीता से मार-पीट भी करता था। धीरे-धीरे इन सब की भनक सीता के पिता को लगती है। तब उन्हें मालूम हुआ कि ये जमीन लेने के चक्कर में है। यहाँ भी ना चाहते हुए भी सीता के पिता ने धीरेंद्र के नाम सड़क के किनारे 2 कट्ठा जमीन कर दिया।

अब धीरेंद्र को बस उसी जमीन पर घर भी बनाना है। अब इसके मन में कौन सी योजना उत्पन्न हो रही है किसी को भी मालूम नहीं। घर बनाने के नाम पर धीरेंद्र ने अपने ससुर से रु 30 लाख उधार के तौर पर लिए। उसका घर भी तैयार हो गया। अपने ससुर का फ्लैट खाली कर उसमें उसने किराया लगा दिया जिसका मासिक किराया धीरेंद्र खुद लेता है। प्रश्न यह उठता है कि क्या उसने अपने ससुर से जो उधार लिया था, वो चुकाया? इस तरह के लोग समाज में अब ज्यादा दिखने लगे हैं। जहां घर जमाई के नाम पर उन्हें सिर्फ अपना फायदा ही नजर आता है।

सन्नी कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

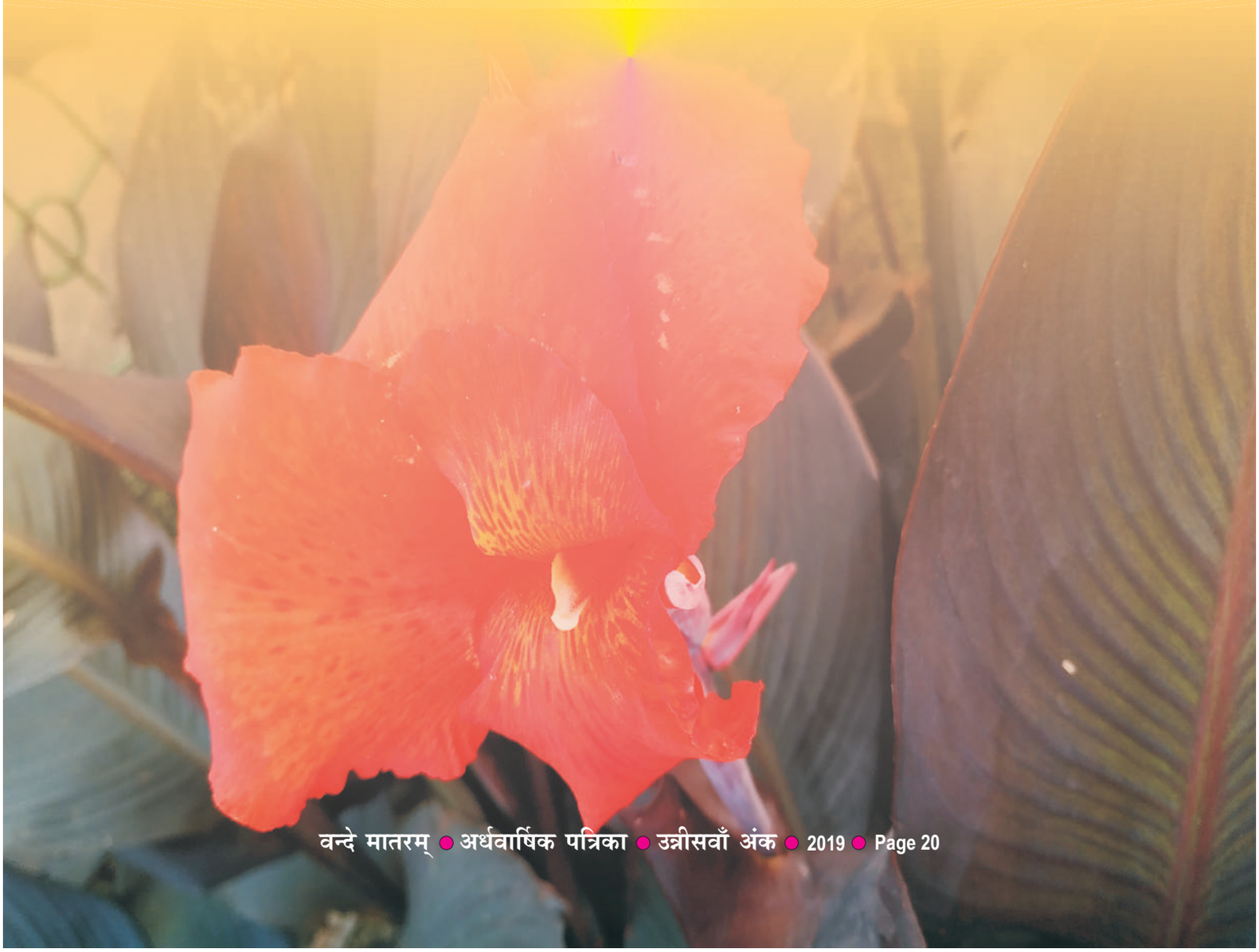

आत्म जागरण

सुनहरा मौसम था, शंख की आवाज़
स्वागत की नवागता रोशनी को।
बापू का मन खिल उठा खुशी से
लक्ष्मी जो आई घर में।
खिल उठा था आँगन, बच्ची के सुर से,
कभी रोना तो कभी हँसना
कभी ज़िद करना, तो कभी बापू को मनाना–
आज खिलौने चाहिए तो कल सजावट का सामान।
सबको जो प्यारी हो गयी रोशनी,
बापू की लाडली रानी।

स्कूल जाने लगी थी छोटी सी रोशनी –
जैसे आसमान में चाँद का टुकड़ा
निकल आई काले बादलों से।
जब ऊंची कक्षा में पहुंची रोशनी,
जितनी सुंदर हो उठी साथ में सयानी।
मन लगाकर करती रही जब पढ़ाई,
अचानक बापू की तबीयत खूब बिगड़ी।
न बाहर जा पाए, न कर पाए कोई काम,
लाडली बेटी को चिंता आई
कैसे जारी रखे पढ़ाई का काम।
पड़ोस के बच्चो को पढ़ाने लगी
पास में रखकर अपना किताब,
विद्या को बांटते बांटते
ग्रहण भी करती रही अविराम।

किशोरी रोशनी अब बनी एक नारी
वक्त ने उजाड़ी सौन्दर्य सारी
पर बारहवीं कक्षा जब गुजरने लगी
पूरे परिवार का बोझ उस पर ही आ गिरा,

काम करने के लिए जब निकलना पड़ा बाहर
कुछ हिंसक आँखों की नज़र पड़ी उसपर।
अकेली ही खड़े रहने की कोशिश चलायी रोशनी,
पर उनकी सुंदरता बाधा होकर बनी।

पड़ोस मोहल्ले के कई उग्र जवान
जीना ही मुश्किल कर दिया रोशनी की जान।
दिखाते रहें वे कितने हैं बलवान –
गंदगी – फैलाते रहे वे रोशनी के नाम पर।
कुप्रस्तावों से हमेशा परेशान कर देते थे वे
अकेली नारी तब पर भी साहसी बनकर रही खड़ी।

धैर्य की सीमा लांघकर एक दिन
चपेटा लगाई वह एक – दो– तीन।
भरे बाजार में खड़े होकर यह अपमान
सह ना पाये वे बलवान
बदला लेने के लिए वे करे इंतज़ार
इस तरह कुछ समय हो गया पार।
इतने में और भी बिगड़ा परिवार का संतुलन,
रोशनी चिंतित थी, कैसे करें अभावों को कम।
पढ़ाने का काम और बढ़ा दिया उसने
रात तक ट्यूशन, लौटती थी थकी दिल से।
ऐसे मौके में अचानक आक्रमण,
ज्वलन! ज्वलन! यह तेज़ाब की ज्वलन!

बीत गए इस तरह कई साल
कहाँ चंद्रमा? कहाँ सुंदरता का मोह जाल।
एक विकृत मुखड़ेवाली बापू की प्यारी रोशनी
खोकर अपनी श्री, लेकिन मन से बनी तेजस्वी।
कभी न छुपाई अपने को,
बाहर निकली, भरोसा बनी परिवार का

लोग उसे देखकर डरते रहें
दरवाजा बंद करते रहें,
पर वह अपनी पढ़ाई करती रही,
कानून की पढ़ाई पढ़ती रही,
बाद में वह एक वकील बनी,
अपने अधिकार की रक्षा की लड़ाई लड़ती रही।
तेज़ाब से जलकर भी कभी हिम्मत न हारी रोशनी
तलाश करती रही उन दुश्मनों का जिसने
उसको बनाया बेरंगी।

इतने में एक अवसर आया,
पुलिस के जाल में फंसे वे दुर्जन,
सरकारी वकील रोशनी ने करें सवाल
प्रमाणित किया सारी गलत करतूतों का।
ज़िंदगी की श्रेष्ठ लड़ाई लड़ी उस सुश्री ने
बनी असुर विनाशिनी समान,
ज़िंदगी भर क़ैद की सज़ा जो मिला सबको
तन की नहीं मन की श्री वापस आई।

ऐसी बिखरी पड़ी हैं कितनी हीं स्त्रियाँ
बनकर बाल हिंसा का शिकार –
उठकर खड़े हो जाओ, रोशनी बनो,
अंतरात्मा को जागृत करो
समाज रहा तुम्हें पुकार।

तापसी आचार्य (बसाक)
सहायक लेखा अधिकारी
निधि – VIII

रमा

आज रमा के बेटे हर्ष का पहला जन्मदिन है। खुशी से उसके ज़मीन पर पाँव नहीं पड़ रहे हैं। और हो भी क्यों ना, वो कहते हैं ना जब कई मुश्किलों के बाद खुशियाँ दरवाजा खटखटाती है, तो इंसान को उसका महत्व समझ में आता है। रमा और श्याम की शादी को 6 साल हो चुके थे, पर उनके जीवन में अभी तक खुशियों ने दस्तक नहीं दी थी। हालांकि दोनों में बेहद प्यार था लेकिन सास ससुर के तानों से रमा दुखी हो जाती थी, और रमा का उतरा चेहरा देख श्याम भी उदास हो जाता था। आखिर करे तो भी क्या करे। माँ बाप को बोलने से घर की शांति भी भंग हो जाती थी और वे उसे जोरू का गुलाम बोलने से ज़रा भी नहीं हिचकिचाते थे। श्याम अपने माँ-बाप का इकलौता बेटा था। श्याम की बहन रंजू का ब्याह हो चुका था और वो अहमदाबाद में अपने पति के साथ रहती थी। श्याम की एक किराने की दुकान थी, जो स्टेशन के पास होने के कारण काफी अच्छी चलती थी। और श्याम भी अपने व्यापार की हमेशा वृद्धि करने में लगा रहता था।

उसे वो दिन आज भी याद है जब उसने रमा को पहली बार अपनी दुकान के पास देखा था। डरी सहमी रमा उस वक़्त 20 वर्ष की थी। वो स्टेशन पर अपनी माँ-बाप से बिछड़ गयी थी। पहली बार शहर में आने के कारण उसको समझ नहीं आ रहा था कि वो किससे मदद मांगे, और उसके पास पैसे भी नहीं थे। तब उस वक़्त श्याम ने रमा के पापा के नंबर पर उसकी बात करा कर, उसे उसके माँ-बाप से मिलवाने में मदद की थी। पहली बार में ही श्याम रमा को अपना दिल दे बैठा था। इस नकली चेहरों की दुनिया में रमा का ताजगी से भरा चेहरा आखिर किसी को अपनी तरफ आकर्षित कैसे न करे? श्याम ने रमा के बाबूजी का नंबर अपने मोबाइल में सेव कर लिया था और उसने निश्चय कर लिया था कि अगर ब्याह करेगा तो रमा से ही।

जब श्याम ने रमा की बात अपने परिवार के सामने रखी तो सबने एक सिरे से नकार दिया क्योंकि श्याम की माँ उसका ब्याह अपने जानने वाले एक दूर के रिश्तेदार की ननद से करना चाहती थी। वह दहेज में साथ काफी रुपया लाने वाली थी। रमा उन्हें बिलकुल पसंद नहीं थी क्योंकि उन्हें पता था कि एक गरीब घर की बेटी दहेज में अपने साथ कुछ नहीं लाएगी। पर श्याम भी निश्चय कर चुका था कि अगर शादी करेगा तो रमा से ही, नहीं तो किसी से भी नहीं। श्याम की जिद के आगे माँ बाप को आखिर झुकना पड़ा। वे रिश्ता लेकर रमा के घर जा पहुंचे। रमा एक साधारण परिवार से ताल्लुक रखती थी। उसका घर भी जर्जर एवं टूटा फूटा नज़र आ रहा था। श्याम की माँ ने अपनी नाक को साड़ी के पल्लू से ढका और घर के अंदर प्रवेश की। उसके पिता का भी रवैया कुछ खास अच्छा नहीं था। रमा को इस विषय में कुछ भी जानकारी नहीं थी। वो तो अपने सामान्य सेकपड़ों में घर के आगे झाड़ू लगा रही थी। श्याम को देखते ही वो घर के अंदर जा कर छुप गयी। खैर शादी-ब्याह की बात शुरू हुई। रमा के पिताजी समझ गए थे कि श्याम के माता-पिता इस रिश्ते से खुश नहीं थे। बस श्याम की खातिर वो यहाँ तक

आ गए। रमा के पिताजी की आर्थिक हालत किसी से छुपी नहीं थी। वो खुद भी पहले सब कुछ साफ कर देना चाहते थे कि वो उनकी हैसियत के हिसाब से जितना बन पड़ेगा वो करेंगे। इन्हीं बातों के बीच रमा की माँ रमा को तैयार कर ले आई। श्याम उसे देखकर मंत्रमुग्ध हो गया। उसे वह किसी देवी की छवि नज़र आ रही थी। उसके माँ बाप भी उसकी सुंदरता देखकर स्तब्ध हो गए। उन्होने इतना सुंदर ओर तेज़ से भरा चेहरा पहले कभी नहीं देखा था। लेकिन उनकी आंखो के आगे दहेज नाम का पर्दा पड़ा हुआ था। नाक-भौं सिकोड़कर दोनों रिश्ते के लिए तैयार हो गए और शादी की तिथि नजदीक आ गयी। श्याम ने अपनी शादी में अपनी तरफ से कोई कमी नहीं छोड़ी। रिश्तेदारों को ताना मारने का कोई मौका नहीं दिया। शादी में आए लोगों ने दुल्हन की जमकर तारीफ की।

श्याम यह सब सुनकर फूला नहीं समा रहा था। सभी मेहमानों ने खुशी -खुशी विदा लिया। इसके साथ ही रमा ने घर की सारी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। उसकी सास ने जान बूझकर घर की कामवाली को काम से हटा दिया। पर रमा ने उनके उस फैसले का स्वागत किया। एक के बाद एक रमा की सास उस पर जुल्म करती रही पर रमा ने उफ़्फ़ तक नहीं किया। ये सब श्याम की नज़रों से छिपा नहीं था। वो कभी कुछ कहता तो माँ पिताजी रमा से और ज़्यादा नाराज़ हो जाते। और कहते कि हमारे बेटे को इसने हमारे खिलाफ भड़का दिया है। धीरे धीरे ये सब की रमा और श्याम को आदत सी हो गई और उन्होंने ज़िंदगी से समझौता कर लिया। काफी वर्ष बीत जाने के बाद भी रमा और श्याम को माँ-पिता बनने का सुख प्राप्त नहीं हो पा रहा था। इस बात से रमा की सास ने श्याम को भी ताने मारना शुरू कर दिया कि 'और करो छोटे घर की लड़की से ब्याह' हमारा वंश अब कभी आगे नहीं बढ़ पाएगा। पता नहीं किन कर्मों की सजा मिली जो ऐसी बहू हमें मिली। इस दुख की घड़ी में उनका साथ देने के बजाय, उनकी प्रताड़ना बढ़ती ही जा रही थी। तभी श्याम की बहन रंजू ने उन दोनों को अहमदाबाद के एक जाने माने अस्पताल में इलाज करने को कहा। वे दोनों फौरन ही दीदी के बताए अस्पताल में पहुंचे। इस बीच सास ससुर के तानों का कोई अंत ही नहीं दिख रहा था। वे अक्सर कहते कि साथ तो कुछ रुपया पैसा लाई नहीं उल्टा हमारा सारा पैसा पानी की तरह बहा दिया इसने। इसपर श्याम और रमा बस एक दूसरे को दुख भरी नज़र से देखने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते थे। साल भर के इलाज के बाद आखिर रमा ने खुशखबरी सुनाई। देखते ही देखते उनके घर में एक पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई सासू माँ अपने बेटे और अपने पोते पर अपना सारा प्यार न्योछावर कर दिया। पर अभी भी अपनी बहू के लिए उनके दिल में कोई प्यार नहीं था।

कुछ शोर से श्याम की आँख खुली और उसने देखा कि जन्मदिन की तैयारी करते करते रमा अचानक से बेहोश हो गयी। सभी ने उठा कर उसे बिस्तर पर लिटाया। कुछ देर के बाद उसे होश आया। श्याम ने कहा चलो डॉक्टर के पास चलते हैं, रमा ने यह कहते हुए टाल दिया कि घर में इतने सारे मेहमान आए है। हम कैसे कहीं जा सकते है? फिर वो जन्मदिन की तैयारियों में जुट गयी। सासू माँ ने बहू की सुध भी नहीं ली। वो पोते के जन्मदिन की खुशी में रमी हुई थी। खैर जन्मदिन अच्छे से मना लिया गया। सभी मेहमानों ने विदा लिया। रमा काफी थकी थकी सी लग रही थी। श्याम ने जबरदस्ती उसे आराम करने को भेजा। दिन प्रतिदिन रमा की तबीयत और भी

खराब होती जा रही थी। वो आए दिन बेहोश होकर गिर जाती थी। श्याम सब कुछ छोड़ रमा के इलाज में दिन रात लग गया। पैसा भी पानी की तरह बहा दिया उसने। हर्ष अपनी दादी के पास आसानी से रह लेता था। सासू माँ ने कभी भी रमा से उसका हाल नहीं पूछा। रमा के चेहरे की चमक और सुंदरता सब खत्म हो गयी थी। हर्ष का दूसरा जन्मदिन आते आते रमा एक कंकाल सी हो गयी थी। इस बार उसमे इतनी हिम्मत ही नहीं थी कि वो हर्ष का जन्मदिन धूमधाम से मना सके। सासू माँ इस बात पर भी ताना मारने से पीछे नहीं हटी और कहने लगी इसके कारण मैं अपने पोते का जन्मदिन धूम-धाम से ना मना सकी। रमा और श्याम का कलेजा छलनी हो गया। श्याम का सब्र का बांध टूट गया वो माँ को जबाब देने ही वाला था कि रमा ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे अपनी कसम दी। श्याम अपने गुस्से पर काबू पाने के लिए घर से निकल गया। इन्हीं सब के बीच रमा बेहोश होकर गिर पड़ी। ससुर जी ने श्याम को घर आने के लिए फोन किया। श्याम भागता भागता घर आया और रमा को फौरन अस्पताल ले गया। रमा ने रास्ते में ही श्याम की बाहों में दम तोड़ दिया। बस उसके मुँह से आखिरी शब्द यही निकले कि हर्ष का ध्यान रखना। श्याम इस बात से भलीभाँति अवगत था कि रमा उसे छोड़ कर अब कभी भी जा सकती है। लेकिन इस तरह जाएगी उसने कभी नहीं सोचा था। उसकी नज़रों के आगे उसकी पूरी खुशियाँ बिखर गयी। उसके सामने बस हर्ष का मासूम चेहरा नज़र आ रहा था, कि बिना माँ कैसे के एक बच्चा अपनी ज़िंदगी बिताएगा। वो ठीक से रो भी नहीं पा रहा था। उसके आँसू जैसे सूख से गए थे। वो बेजान सा अपनी पत्नी के बेजान शरीर को लेकर बस पड़ा था। अस्पताल पहुँच कर श्याम ने किसी तरह सारी औपचारिकता पूरी की और रमा को लेकर घर पहुँचा। श्याम के माँ बाप भी समझ नहीं पाये की अचानक ऐसा क्या हो गया। पिताजी ने श्याम से पूछने की कोशिश की पर श्याम तो जैसे एक बुत बन चुका था। वो कुछ बोल नहीं पा रहा था बस हर्ष को एक टक देखे जा रहा था। श्याम की माँ ने उसे काफी समझाने का प्रयास किया। झूठ मूठ के दो आँसू भी बहाये पर कहीं न कहीं वो खुश भी थी कि चलो मुसीबत से पीछा छूटा। अब वो श्याम का ब्याह अपने मन चाहे घर में करा सकेगी।

अब रमा को गुजरे 2 महीने हो चुके हैं, श्याम की हालत अभी भी वैसी ही हैं। हर्ष भी अपनी माँ की याद में रोता है। श्याम के माँ पिताजी को जैसे रमा के जाने से कोई फर्क ही नहीं पड़ा। उनकी ज़िंदगी अभी वैसी ही चल रही थी जैसे पहले थी। अब श्याम की माँ उसपर दूसरी शादी का दबाव डालने लगी, वो कभी उसे हर्ष का वास्ता देती तो कभी अपने बुढ़ापे का। बीच बीच में रमा की बुराइयाँ भी करती। श्याम चुप चाप ये सब सुनता लेकिन कुछ कहता नहीं।

एक दिन जब श्याम दुकान से घर वापस लौटा तो अपने घर में लड़कीवालों को देखकर वो अचंभित रह गया, जो उसकी माँ के कहने पर उसके लिए रिश्ता लेकर आए थे। उसने गुस्से में उनको घर से निकल जाने को कहा। वे लोग चुप चाप वहाँ से निकल गए। उसके बाद वो अपनी माँ पर बरस पड़ा। उसे शादी नहीं करनी मतलब नहीं करनी, वो रमा की जगह और किसी को नहीं दे सकता। माँ ने जी भर कर श्याम को खरी खोटी सुनाई। इस झगड़े के बीच में उसने रमा को भी खींच लिया। श्याम ने माँ से अनुरोध किया कि अब तो उसको छोड़ दे। जीते जी तो हमेशा उसे ताने मारे, मरने के बाद तो उसकी आत्मा को चैन से रह लेने दे। लेकिन माँ कहाँ कुछ सुनने वाली थी। उन्होंने बोलना शुरू किया तो फिर रुकने का नाम ही नहीं लिया। वो कहने लगी पता नहीं किस कोख की जनी थी, एक वारिस देने में इतने साल लगा दिये। ज़रूर उसकी माँ ने पिछले जन्म में कोई पाप किए थे जो ऐसी बेटी मिली। हम सब को परेशान कर दिया। मेरे बेटे का सुख चैन सब छीन लिया, पता नहीं कहाँ-कहाँ दौड़ाया उसने इलाज के चक्कर में। खर्चा करवाया सो अलग। तब जाके मुझे मेरा पोता मिल पाया। भगवान ऐसी बहू किसी को ना दें। इस पर श्याम ने चिल्ला कर कहा बस माँ बस। पाप उसकी माँ ने नहीं, तुमने किए होंगे, कोई कमी उसमे नहीं थी, मुझमें थी। पैसा उसके इलाज में ख़र्च नहीं हुआ, मुझमे ख़र्च हुआ। उसके कारण मुझे नहीं दौड़ना पड़ा

बल्कि वो मेरे साथ साथ हर जगह गयी ताकि तुम लोगो को ये बात कभी पता ना चले। चुप चाप तुम्हारे ताने सुनती रही। कभी उफ़्फ़ तक नहीं किया। लेकिन तुमने तो कभी रुकने का नाम ही नहीं लिया। जिस दिन वो इस दुनिया से गयी, तुम्हारे ताने सुनकर ही गयी। तुमलोगों को शायद पता नहीं चला, या फिर कहे की तुमने कभी जानने की कोशिश ही नहीं की। पिछले एक साल से वो कितने दर्द में थी। उसे कैंसर था जोकि हमें आखिरी स्तर में पता चला। रात रात भर दर्द में रोती रहती थी। लेकिन फिर भी सुबह उठ कर सारा काम करती थी ताकि तुमलोगों को कोई तकलीफ नहीं हो। पर तुमने कभी ये जानना ज़रूरी ही नहीं समझा कि आखिर क्यों वो बार बार बेहोश हो रही है, आखिर क्यों उसका सुंदर चेहरा झुर्रियों से भर गया। तुम्हें तो उसका आराम करना भी पसंद नहीं था। तुम्हें लगता की वो काम ना करने का बहाना बना रही है। मैंने उसे अपनी कसम दे रखी थी, ताकि वो थोड़ा आराम कर सके। जितना उसके शरीर में कष्ट था उससे कहीं ज़्यादा कष्ट तुमने उसके मन को दिया। मैंने आज तक तुमसे कुछ नहीं कहा क्योंकि उसने ही मुझे मना किया था। लेकिन आज मैं कहता हूँ कि तुम जैसी माँ और तुम जैसी सास किसी को ना मिले। इतना कहकर श्याम हर्ष को लेकर अपने कमरे में चला गया। श्याम की माँ का कलेजा छलनी हो गया। उसे समझ आ गया था कि रमा की कष्टदायी मौत की ज़िम्मेवार कहीं ना कहीं वो है। वो बस किसी तरह रमा से माफी माँगना चाहती थी लेकिन अब काफी देर हो चुकी थी। उनके पश्चाताप की कोई सीमा नहीं थी, वो खड़े-खड़े नरक की आग में जल रही थी। उन्हें अपनी जिंदगी से नफरत सी हो गयी थी। वो किसी तरह रमा को अपने पास बुलाना चाहती थी। रमा की तस्वीर पे अपना सर रख कर घंटों रोयी वो। कुछ देर बाद श्याम हर्ष और अपने सारे सामान के साथ कमरे से बाहर आया। वो अब इस घर में एक पल रुकना नहीं चाहता था जहां उसकी रमा को मृत्योपरांत भी इतने अपमान झेलने पड़े । यह देखते ही श्याम की माँ के होश उड़ गए वो जाके श्याम के कदमों में जा गिरी। वो अब अपने बेटे को नहीं खोना चाहती थी। उसने श्याम से लगातार माफी मांगी और हर्ष को उससे छीन लिया। और कहने लगी मुझे मेरा पश्चाताप करने का मौका दो, नहीं तो मैं जीते जी मर जाऊँगी। श्याम ने अपना इरादा बदल दिया। उस दिन श्याम, हर्ष, माँ और पिताजी सबलोग साथ बैठ कर खूब रोये।

अब रोज़ माँ रमा की तस्वीर के आगे दीपक जलाती थी और उससे माफी मांगती थी। हर्ष का दाखिला अब स्कूल में हो गया था। वो दादा जी के साथ स्कूल आया जाया करता था। श्याम भी अब दुकान को संभालने लायक हो गया था। जल्दी घर लौट कर हर्ष का होमवर्क कराना उसका ही काम था। हर्ष को श्याम से माँ बाप दोनों का प्यार मिलता था। श्याम अपने छोटे से परिवार में अब खुश था, और उसने रमा के साथ बिताए समय को अपनी ज़िंदगी जीने का आधार बना लिया था। सभी लोग रमा की यादों को सँजोये अपनी ज़िंदगी फिर खुशी खुशी जीने लगे।

आस्था गुप्ता
लेखाकार

दर्द-ए- जुदाई सही नहीं जाए...

दर्द-ए- जुदाई सही नहीं जाए...
तुमसे बिछड़कर रहा नहीं जाए...
दिल से हमारे कुछ कहा नहीं जाए...
आँसू जुदाई का पिया नहीं जाए...

क्यों छुप-छुप के तुमकों ही देखे दिल हमारा...
क्यों दूर होकर भी पास लगते हमारे...
क्यों चाहत हमारी तुम्हें नजर नहीं आए...
क्यों दूरी जुदाई का सहा नहीं जाए...

तुमसे बिछड़ कर रहा नहीं जाए...
दिल में तुम हो, धड़कन में तुम हो...
साँसों में तुम हो, बातों में तुम हो...
कैसे बताऊँ एहसान ये तेरे...।।

बस इतना सा है तुमसे कहना...
नहीं दूर होकर तुमसे रहना...
तुम से है ये जिदंगी हमारी ...
तुम बिन कोई न हमारा सहारा...

कोई भूल हो तो मुझे माफ करना...
दिल से हमारा इंसाफ करना...
भूल कर भी मुझसे जुदा नही होना...
चाहे जमाना हो जाए बेगाना...।।

दर्द-ए- जुदाई सही नहीं जाए...
तुमसे बिछड़कर रहा नहीं जाए...
दिल से हमारे कुछ कहा नहीं जाए...
आँसू जुदाई का पिया नहीं जाए...

जीवन का आधार तुम्हीं हो...
साँसों की रफ्तार तुम्हीं हो...
आँखों की अंगार तुम्हीं हो...
शब्दों की झंकार तुम्हीं हो..।।
बस इतना है तुमसे कहना...
होकर दूर मुझसे तू न रहना...
चाहे जमाने का पड़े दर्द सहना...
फिर भी तुम हमारे ही रहना...।।

यही है तमन्ना जिंदगी की हमारी...
जब तक चले ये साँसें हमारी...
तबतक हूँ मैं तुम्हाँरा, तुम हमारी...
जबतक जिंदा ये साँसें हमारी...।।

दर्द-ए- जुदाई सही नहीं जाए...
तुमसे बिछड़कर रहा नहीं जाए...
दिल से हमारे कुछ कहा नहीं जाए...
आँसू जुदाई का पिया नहीं जाए...।।

अमित कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

प्यार की पुकार

प्रसेनजीत इंजिनियरिंग का प्रथम वर्ष का छात्र है। साथ ही वह एक अच्छा फुटबॉलर भी है, मेंडोलिन भी अच्छा बजाता है, वह बॉलीवूड के सुपरस्टार शाहरुख खान का बहुत बड़ा फ़ैन है वह अपने कॉलेज के फ्रेशर्स वेलकम समारोह में मेंडोलिन बजाकर काफी ख्याति प्राप्त कर चुका था, परंतु जीवन में उसने जो बड़ा पुरस्कार पाया, वह थी प्रिया, प्रिया प्रथम वर्ष की छात्रा थी।

वक़्त जैसे-जैसे बीतता गया दोनों को एहसास होने लगा कि उनकी मित्रता महज मित्रता की सीमा में बंध कर नहीं रहना चाहती है। अंततः वह क्षण आ गया जब प्रिया ने कॉलेज कैंटीन में प्रसेनजीत से अपने प्यार का इजहार किया। यह वह क्षण था जब किसी भी नवयुवक लड़के को इतनी खूबसूरत लड़की के प्यार के इजहार को स्वीकार न करना मुमकीन नहीं था। प्रसेनजीत भी कोई अपवाद नहीं था। यही से शुरू हुआ उन दोनों के जीवन का एक नया अध्याय। दोनों ने प्रेम के पथ पर साथ चलने की प्रतिबद्धता जताई।

परंतु प्रेम के राहों में कांटे ही कांटे होते है। मित्रों का खिल्ली उड़ाना, हँसना इन सभी बातों की परवाह किए बिना ही उनका प्यार आगे बढ़ता रहा, वे जानते थे कि प्रेम का गुलाब पाने के लिए काँटा चुभेगा ही, दर्द बिना प्यार की प्राप्ति नहीं होती। जो भी हो,प्रसेनजीत की बचपन से इच्छा है कि वह सिविल सर्विस में जाए। कॉलेज के द्वितीय वर्ष से ही वह इसकी तैयारी में जुट गया था। इस तैयारी के दौरान उसे अपने प्रेम के लिए समयदेना संभव नहीं था। उन दोनों का प्यार समय के अभाव के कारण उतार-चढ़ाव से गुजरने लगा। धीरे – धीरे बात इस हद तक भी पहुँच गयी कि प्रसेनजीत के पास अब दो ही विकल्प था या तो वो प्रेम को चुने या सिविल सेवा को। प्रेम और सिविल सेवा के बीच प्रसेनजीत ने सिविल सेवा को ही चुन लिया।

धीरे-धीरे उनके कॉलेज जीवन का अंत होने लगा। कॉलेज कैंपस में ही दोनों को इन्फोसिस कंपनी से जॉइनिंग का ऑफर मिला, परंतु दोनों में से किसी ने उस नौकरी को जॉइन नहीं किया। इसके बाद, प्रसेनजीत सिविल सेवा के तैयारी के लिए दिल्ली चला गया और प्रिया सुदूर देश अमेरिका में वी.एल.एस.आई. में एम.एस. करने चली गयी।

प्रसेनजीत का अब असली लक्ष्य था- सिविल सेवा। आई.ए.एस. बनना ही उसका सपना था – जिसके लिए उसने अपने प्यार को ठुकरा दिया था। वह हमेशा सपना देखता था कि वह एक दिन जिला पदाधिकारी बनेगा। तभी शायद उसे हजारों-हजार लोगों का प्यार मिलेगा। लेकिन प्रसेनजीत अपनी पुरानी यादों को नहीं भूल पाता था। अचानक से पुरानी यादें उसके सपनों में दस्तक देने लगती थी। वह और प्रिया जब बस में पिछली सीट पर बैठ कर कॉलेज जाते थे, तब प्रिया चाहती थी कि ट्राफिक जाम हो ताकि उन दोनों को ज्यादा समय मिल सके एक साथ समय बिताने को, अजीब पागलपन था न।

प्रसेनजीत एक बार बहुत बीमार था, तब प्रिया ने फोन कर पूछा था – 'कैसे हो?' 'बहुत बीमार हूँ '– प्रसेनजीत ने कहा, ' यह शरीर की बात है, सभी तो मेरे जैसे नहीं है कि जैसा भी व्यवहार करो, बुरा नहीं मानती' – प्रिया ने कहा एक दिन की बात है, दोनों बस में जा रहे थे, रास्ते में प्रसेनजीत बस से उतरा – तभी एक सह-यात्री ने प्रिया से पूछा – 'क्या तुम उस लड़के को प्यार करती हो?' इस घटना के बारे जब प्रिया ने फोन पर प्रसेनजीत को बताया तब प्रसेनजीत ने पूछा – 'यह बात उस अंजान आदमी को कैसे पता है', तभी प्रिया ने जवाब दिया - 'मेरे प्यार के बारे में सभी जानते है, सिर्फ तुमको छोड़कर'।

जीवन की लड़ाई अब खत्म हो गयी है, प्रसेनजीत ने सिविल सेवा की परीक्षा में 47 वां रैंक प्राप्त किया, सभी समाचार पत्रों के मुख्य पृष्ठ पर उसकी तस्वीर छपीं इतनी सफलता के बावजूद वह अपने प्रेम की व्यर्थता की ग्लानि नहीं भूल पा रहा था, ऐसा लगता है कि प्रिया का खूबसूरत चेहरा आज भी उसे बुला रहा है। कुछ दिन बाद प्रसेनजीत ने लालबहादुर शास्त्री नैशनल अकादमी ऑफ एड्मिनिसट्रेशन, मसूरी में आई.ए.एस. प्रोबेशनर के रूप में जॉइन किया। वहाँ एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रसेनजीत की मुलाक़ात निलांजना नाम की एक लड़की से हुई, निलांजना दिल्ली के लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज की अंतिम वर्ष की छात्रा थी। निलांजना के पिता गृह मंत्रालय में संयुक्त सचिव के पद पर कार्यरत थे। धीरे धीरे उन दोनों का संपर्क प्यार में परिणत हो गया था, प्रसेनजीत ने निलांजना के साथ उसके भैया भाभी का संपर्क एकदम दोस्ताना था। धीरे-धीरे समय आ गया, जब प्रसेनजीत और निलांजना एक दूसरे के साथ परिणय सूत्र में बंधने वाले थे। निलांजना के भैया-भाभी भी न्यूयॉर्क से शादी में शामिल होने के लिए पहुंचे। निलांजना की भाभी को देखकर प्रसेनजीत का हृदय कुछ समय के लिए थम सा गया, यह तो प्रिया है। आज वह दूसरे किसी की परिणीता है, लेकिन प्रसेनजीत और प्रिया दोनों ने ही अपने भावनाओं को काबू किया जो भी हो दुल्हन जब विदाई के बाद चली जाती है, तब सभी लोग रोने लगते है। इसी क्रम में प्रिया की आँखों से भी अश्रुधारा बह रहे थे। लेकिन उसके आंसुओं का कारण शायद कुछ और भी था।

शुभदीप चट्टोपाध्याय

लेखाकार

घड़ी

समय बहता रहता है
दिन रात एक हो जाता है
सिर्फ रुकती नहीं घड़ी
वह टिकटिक करती रहती है,

आँखों में आँखें डाल कर
बांधना है प्यार का बंधन
सिर्फ रुकती नहीं घड़ी
वह बिना संकोच टिकटिक करता रहता है,

अभिमानी मन का दर्द
सिर्फ आत्मा ही जानता है
सिर्फ रुकती नहीं घड़ी
वह अविरत चलती रहती है,

आसमान में बादलों का खेल
आने-जाने का मेला
सिर्फ रुकती नहीं घड़ी
वह लगातार बदलती रहती है ।

दिपान्विता पात्र
लेखाकार

सपनों का महल

जीवन जीने का अपना अंदाज होना चाहिए। कुछ भी हो जीवन में कभी उदास नहीं होना चाहिए। एक समय की बात है की हमारे घर के पास एक बहुत ही निर्धन परिवार में पलने वाले श्री गौतम ने अपने जीवन में अपने सपनों के महल को कुछ खास अंदाज में तैयार किया।

गरीब परिवार में पलने-बढ़ने के कारण गौतम की पढ़ाई-लिखाई कुछ खास नहीं हो पायी थी। वह दिन में पापा के साथ काम में हाथ बँटाता और अपनी पढ़ाई – लिखाई भी जब टाईम मिलता वह करता था। वह अपने जीवन के बारे में मानों कुछ भी नहीं जानता था। इसने किसी तरह हिंदी मिडीयम स्कूल से पढ़ाई पूरी कर कॉलेज में अपनी पढ़ाई जारी रखने का प्रयास किया। और वह सफल भी रहा। गाँव के कुछ लोग बोलते, आप अपने बेटे गौतम को कुछ अच्छे काम में क्यों नहीं लगा देते जिससे आपके घर को कुछ सपोर्ट मिले। परंतु उनके पिताजी का कहना था वह अभी बच्चा है उसे जैसा ठीक लगता है, वह करे। वह मेरे काम में मदद करता ही है, वह कॉलेज तो सिर्फ नाम के लिए जाता है। वह पढ़ाई – लिखाई घर पर ही ज्यादा समय देकर करता है साथ ही मेरा हाथ भी बँटाता है। मैं उसे अभी कुछ बोल भी नहीं सकता क्योंकि उसे अपने जीवन में मैं कुछ खास दे भी नहीं पाया और अभी उसकी उम्र ही क्या हुई है? गौतम अपनी पढ़ाई लिखाई से ज्यादा समय अपने पापा के काम में हाथ बँटाता था। एक दिन की बात है वह कॉलेज में क्लास कर रहा था और उसकी मुलाकात अपने मोहल्ले में रहने वाले रमेश से हुई। रमेश ने भी संयोग से उसी कॉलेज में अपना नामांकन करवाया था। रमेश पढ़ने में बहुत तेज था। वह गौतम को देखकर बोला-"अरे भाई, गौतम! तुम यहाँ पढ़ाई करते हो?" गौतम बोला-"हाँ भैया जी! मुझे अभी कुछ ही दिन हुआ है, एडमिशन लिए हुए।" रमेश ने गौतम से कहा- "अगर कोई भी मदद की जरूरत हो तो मुझे कहना।" गौतम ने कहा- "जी भैया जी।" इसी तरह गौतम और रमेश एक दूसरे से ज्यादा करीब होते चले गए गौतम और रमेश कभी – कभी कॉलेज भी साथ जाने लगे। रमेश गौतम को अपनी बाईक पर बैठाकर ले जाता। कभी गौतम अपने पापा के कामों में मदद करने के लिए कॉलेज नहीं भी जाता था। इस बात को लेकर रमेश ने गौतम से पूछा- "तुम कॉलेज रोज क्यों नहीं जाते?" गौतम ने कहा- "मैं थोड़ा अपने पापा के कामों में मदद करने के लिए कॉलेज रेगूलर नहीं पहुँच पाता।" रमेश ने गौतम से कहा- "गौतम तुम आगे क्या करना चाहते हो?"गौतम ने कहा- "अभी इस विषय पर कुछ भी नहीं सोचा हूँ।" रमेश, गौतम को अपने सच्चे मित्र के रूप में जानने लगा। उन दोनों की दोस्ती गहरी होती चली गयी। रमेश ने एक दिन गौतम को कहा- "अरे यार क्यों नहीं हमदोनों मिलकर कुछ पाट-टाईम काम चालू कर दे, जिससे तुम्हारी पढ़ाई लिखाई में थोड़ी मदद मिल सके।" गौतम ने कहा- "अरे भाई रमेश! तुम तो जानते हो कि मैं पापा के साथ दुकान में थोड़ा समय देकर उनका हाथ बँटाता हूँ। अब तुम ही बताओं मैं खुद का काम कैसे करूँ।" रमेश ने कहा- "एक काम करो कि तुम अपने पापा से इस बारे में बात तो करके देखो।" गौतम ने कहा- " ठीक है।

मैं देखता हूँ।" शाम होते ही गौतम ने अपने पापा से इस बारे में बात किया पापा ने कहा- "ठीक है बेटा तुम्हें जैसा ठीक लगे करो। मुझे तो इस बात से बहुत खुशी होगी कि तुम अपना काम खुद करना चाहते हो।"गौतम इस बात से बहुत खुश हुआ। रात भर गौतम इस खुशी के कारण ठीक से सो भी नहीं सका। उसे तो इंतजार था कि जल्दी से सुबह हो और वह रमेश से जाकर इस बारे में बात कर सके। सुबह होते ही उसने रमेश के

घर जाकर कहा चलो भाई हमदोनों के घर वालों को इस बात से तो बहुत खुशी हो रही है कि हमलोग अपना खुद का काम चालू करने जा रहे हैं। गौतम ने रमेश से पूछा- "भाई ! ये बताओ हमलोग करेंगे क्या?" रमेश ने कहा- "मैंने इस बारे में पहले ही सोच रखा है। हमलोग बुक स्टौर खोलेंगे। इस विषय पर मैने अपने चाचा जी से बात कर ली है। उनका बुक स्टोर पहले से ही है, और वे हमलोगों को पूरी तरह से सहयोग करेंगे।" गौतम ने कहा- "तो देर किस बात की, आज ही अपने चाचा जी से बात कर लो।"रमेश ने कहा- "ठीक है। तो चलते हैं चाचा जी से मिलकर आते हैं और आज ही इसके बारे में फाइनल कर लेते हैं, क्योंकि अब मुझे लग रहा है देर नहीं करनी चाहिए।" दोनों ने चाचा जी के पास जाकर सारी बातें बता दी कि हमदोंनो मिलकर पढ़ाई के साथ – साथ अपना काम भी करना चाहते हैं। तभी चाचा जी ने कहा- "ये तो बहुत अच्छी बात है।" रमेश के चाचा जी ने ही सारी व्यवस्था करवा दी। उन्होनें अपने मित्र से बात कर एक बुक स्टोर खोलने के लिए अच्छी जगह और सभी प्रकार के बुक को उपलब्ध करवा दिया। अब उन दोनों ने मिलकर अपना खुद का बुक स्टोर चालू कर लिया। इसी तरह वे लोग अपना – अपना समय निकाल कर कॉलेज भी जाया करते थे। एक दिन रमेश दुकान संभालता तो दूसरे दिन गौतम। इसी तरह वे लोग अपनी पढ़ाई को भी जारी रखना चालू कर दिए। शुरुआत में उन दोनों को थोड़ी दिक्क़त का सामना करना पड़ा परंतु वे लोग उन दिक्कतों को बखूबी झेल अपने कर्म पथ पर चलने लगे। रमेश के चाचा जी का भी इसमें बहुत सहयोग रहा। किसी भी परेशानी में वे गौतम और रमेश को सहयोग करने को तैयार रहते थे। धीरे-धीरे वे दोनों अपने इस कार्य में निपूण होने लगें। गौतम और रमेश की जब कॉलेज की छुट्टी होती तो वे दोनों साथ में दुकान को संभालते। समय बीतता गया। एक दिन की बात है। गौतम के मन में यह ख्याल आया- "अरे भाई रमेश ! अब तो हमलोगों का कॉलेज भी समाप्त होने वाला है। हमलोगों की पढ़ाई भी पूरी हो जाएगी तो आगे क्या किया जाएगा। इसी में दोनों भाई लगें रहेगे या और कुछ खास करना है।"

रमेश ने तभी कहा- "क्यों भाई गौतम ! तुम्हारे मन में कुछ चल रहा है, क्या?" गौतम ने कहा- "हाँ भाई चल तो रहा है परंतु तुम्हे पसंद हो तभी आगे सोच सकते हैं।" रमेश ने कहा- "क्यों भाई? आज तक ऐसा कभी हुआ है कि जो तुम कहो और मैं न सुनू या मैंने जो कहा उसे तुमने नहीं सुना। तो संकोच क्यों गौतम, मुझे पता है तुमने कुछ अच्छ ही सोचा होगा।" तभी गौतम ने कहा- "क्यों नहीं भाई हमलोग बुक स्टोर के साथ एक एजेंसी भी रख लें। जिससे बुक के थोक काम – काज किया जा सके।" रमेश ने कहा- "ये तो बहुत अच्छा सोचा है तुमने।" रमेश ने पुनः कहा कि इस खुशी की बात को बोलने में इतना संकोच क्यों कर रहे थे भाई? तभी गौतम ने कहा-

"नहीं भाई ! बात ये नहीं है, बात है कि हमलोगो को समय के साथ उसमे कुछ पैसा भी लगाना पड़ सकता है।" तभी रमेश ने कहा- "कोई बात नहीं है अब तो हमलोगो की पढ़ाई भी पूरी हो जाएगी। इस बीच हमलोग कुछ पैसों का इंतजाम भी कर लेगें।" गौतम ने कहा- "फिर कोई बात नहीं अभी जैसे बुक स्टोर चल रहा है वेसे ही चलने देते हैं और जैसे ही हमलोगों की पढ़ाई पूरी हो जाएगी हमलोग बुक एजेंसी भी ले लेगें।"

कुछ समय के बाद कॉलेज की पढ़ाई पूरी हो गई। अब वे दोनों अपने सपनों के महल को सजाने के लिए सोचने लगें।

धीरे –धीरे समय बितता गया और रमेश और गौतम के सपने और मजबूत होते चले गए। समय के साथ वे दोनों अपना सारा समय अपने बुक स्टोर में लगाने लगें। वे दोनों एक दूसरे के लिए सोचते रहते और खुद मेहनत करते। इसी लगन और कड़ी मेहनत से उन दोनों ने बहुत ही कम समय में अच्छा पैसा भी जुटा लिया। कड़ी तपस्या के बाद वे अपनी बुक एजेंसी लेने में भी सफल हो गये। बुक ऐजेंसी लेने के बाद, वे दिन-रात मेहनत करने लगें। उनकी मेहनत रंग लाई। उन दोनों ने अपने इस प्रयास से बहुत सा धन अर्जन किया। वे दोनों इसके बाद भी अपनी मेहनत बखूबी जारी रखी और आज एक से दो और दो से तीन करते-करते दोनों ने कई बड़ी – बड़ी बुक एजेंसी खोल रखी है और आज वे उस मुकाम पर हैं जिस मुकाम पर जाने के लिए लोग सोचते रहते हैं। परंतु उस तक पहुँचने का लिए प्रयास नहीं करते।

आज रमेश और गौतम अपनी इस दोस्ती को मिसाल बनाए हुए नित नई उचाईयों को छू रहे हैं। ये दोस्ती उनके सपनों के महल को सजाने के काम आ गयी जैसा रमेश और गौतम ने कभी सोचा भी नहीं था। इस कामयाबी के पीछे की उनकी मेहनत और उनकी सच्ची दोस्ती और निष्ठा काम आई। आज उनका पूरा परिवार काफी खुश है। इस तरह वे अपने सपनों के महल को आज नई ऊंचाई दे पाएँ ।

दोस्ती एक मशाल है उसे जलाए रखना.....
दिल की धड़कन में उसे बसाए रखना.....
नित नई उम्मीद को जगाए रखना.....
हाथों से हाथ मिलाए रखना.....
सपनों के महल को सजाए रखना.....।।

अमित कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

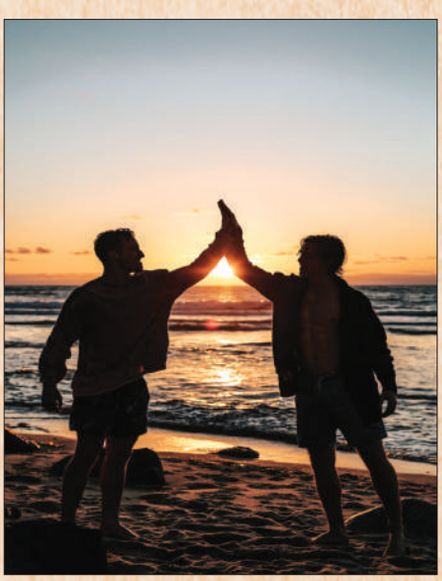

श्री रामकृष्ण परमहंस

भारतवर्ष ऋषि एवं मनीषियों का देश रहा है। इस देश की पावन भूमि पर समय-समय पर ऐसे महापुरुष अवतरित हुए जिन्होंने धर्म, आस्था तथा संस्कृति की जड़ों को मजबूती प्रदान करने के साथ भक्ति एवं श्रद्धा को नया आयाम देने का कार्य किया है । ऐसे ही एक दिव्य आत्मा है – श्री रामकृष्ण परमहंस।

पूर्वांचल बंगभूमि की धरती भक्ति एवं अध्यात्म के क्षेत्र में उर्वर है। बंगभूमि में एक ओर जहां बाउल संतो के भक्तिगीत गूँजते हैं, तो दूसरी ओर महाप्रभु चैतन्य के हरीनाम संकीर्तन हृदय को भाव विभोर करते हैं। श्री रामकृष्ण परमहंस माँ काली के अनन्य भक्त हैं। इस प्रकार बंगभूमि में शाक्त एवं वैष्णव दोनों परंपराएँ मिलकर शांति, प्रेम एवं मानवीय मूल्यों का पोषण करती हैं।

श्री रामकृष्ण परमहंस का जन्म 18 फरवरी 1836 को बंगाल के हूगली जिले के कामारपुकुर ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम खुदीराम और माता का नाम चन्द्र देवी था। श्री परमहंस अपने माता-पिता के चौथे संतान थे। ऐसी मान्यता है कि उनकी माता को उनके जन्म से पूर्व ही यह आभास हो गया था कि उनके गर्भ में पल रहा शिशु असाधारण होगा।

श्री रामकृष्ण परमहंस के बचपन का नाम था – गदाधर। उनकी माँ उन्हे लाड़ से 'गदाई' कहकर बुलाती। बालक गदाधर को बचपन से ही रामायण, महाभारत एवं पुराण की कथाएँ भली लगती थी परंतु गणित में अरुचि थी। बालक गदाधर अपने बड़े भाई रामकुमार चट्टोपाध्याय के साथ कोलकाता आयें। बड़े भाई ने उनकी स्कूली शिक्षा के लिए बहुत प्रयास किया। परंतु गदाधर तो मानों भिन्न ही जगत के प्राणी थे। किताबी ज्ञान उन्हे रास नहीं आता। फलतः उनके बड़े भाई रामकुमार चट्टोपाध्याय ने उन्हें दक्षिणेश्वर काली मंदिर में अपने सहयोगी पुजारी के तौर पर रख लिया। रामकुमार की मृत्यु के पश्चात श्री रामकृष्ण दक्षिणेश्वर काली मंदिर के मुख्य पुजारी बने। प्रसिद्ध दक्षिणेश्वर काली मंदिर का निर्माण रानी रासमणि ने करवाया था। श्री रामकृष्ण परमहंस पारंपरिक रूप से काली पूजा न कर भिन्न रीति से करते थे। कुछ लोगों ने रानी रासमणि इसकी शिकायत की। उन्हें लगा रानी श्री रामकृष्ण से क्षुब्ध होंगी। परन्तु रानी रासमणि श्री रामकृष्ण परमहंस के निष्पाप स्वभाव, सरल मन, ईश्वर के प्रति उनकी आगाध भक्ति तथा उनके शुद्ध अन्तःकरण से भली-भांति परिचित थी। अतः वह किसी के बातों पर अधिक ध्यान नहीं देती थी।

श्री रामकृष्ण चेतना की अंतिम अवस्था तक पहुँच कर भाव समाधि में लीन हो जाते थे। वे कदाचित उस दिव्य एवं अलौकिक अवस्था में पहुँच गए थे जहां सांसारिक वस्तुएँ उन्हें तुच्छ जान पड़ती थी। ईश्वर का

साक्षात्कार करना उनके जीवन का लक्ष्य बन गया था। भक्ति भाव में विह्वल होकर वे काली माँ से दर्शन देने की याचना करते थे। काली माँ के दर्शन से वे अपनी सुध-बुध खोकर भाव समाधि में डूब जाते थे। उनके भक्त जब उनके कानों में काली माता का भजन सुनाते तो उनकी संज्ञा लौट आती।

श्री रामकृष्ण के लिए जगत की समस्त स्त्रियाँ साक्षात काली माँ का स्वरूप थी तथा दुनिया का भोग-विलास मिट्टी का ढेला। वे मानते थे कि रुपया पैसा, भोग-विलास तथा भौतिक वस्तुओं की लालसा मनुष्य को ईश्वर भक्ति से दूर ले जाती हैं। अतः वे स्वयं माया से दूर रहकर ईश वंदना में रमे रहते।

श्री रामकृष्ण का विवाह शारदा देवी से हुआ था। परंतु उनका संबंध पति-पत्नी का न होकर आध्यात्मिक सहधर्मी-सा था। श्री रामकृष्ण शारदा देवी को माँ तुल्य समझते थे। शारदा देवी भी रामकृष्ण के आध्यात्मिक एवं शक्तिपूजन लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उनका सहयोग करती। इस दंपत्ति के जीवन में भोग –विलास एवं वासना के लिए कोई स्थान नहीं था।

ईश्वर का साक्षात्कार के लिए उन्होने भक्ति के समस्त मार्गों को अपनाया । उन्होने कठिन तंत्र साधनाएँ की। अद्वैत वेदान्त का ज्ञान प्राप्त किया। शाक्त पूजन के साथ ही वे श्री राम एवं भगवान श्री कृष्ण के भी उपासक थे। उन्होने इस्लाम मत के अनुसार नमाज़ पढ़ा, रोजें रखे। ईसाई धर्म का पालन किया। समस्त धर्मों में उनकी गहरी आस्था थी। वे कहते – धर्म रूपी मार्ग अलग-अलग हो सकते हैं परंतु गंतव्य सबका एक ही है। ईश्वर, अल्लाह या गॉड अलग नहीं एक ही है। आप 'जल' कहें या 'पानी' अथवा 'वाटर', वस्तु तो एक ही है। श्री रामकृष्ण के विचार आज अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

श्री रामकृष्ण परमहंस ने कई विद्वानो को अपनी ओर खींचा। दक्षिणेश्वर काली मंदिर में भक्तों के साथ-साथ विख्यात विचारकों का तांता लग गया। केशवचंद्र सेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, गिरिश्चन्द्र घोष आदि उनसे बेहद प्रभावित थे। स्वामी विवेकानंद उनके सर्वाधिक प्रिय शिष्य थे। आगे चलकर स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की और उनके उपदेशों एवं शिक्षा का व्यापक प्रचार किया।

श्री रामकृष्ण जीवन के अंतिम पड़ाव में असाध्य रोग से ग्रस्त थे। उनके कटु आलोचक कहते थे यदि वे ईश्वर से साक्षात्कार कर सकते हैं तो यह कष्ट क्यों कर भला ! रामकृष्ण उनकी मूर्खता पर मुस्कुरातें पर कुछ नहीं कहते। कुछ भक्तों ने भावनावश कहा कि उन्होंने दुनिया के कष्टों को अपने गले में धारण किया है। उनके विरोधी पुछते कि तिस पर भी दुनिया में इतना कष्ट क्यों व्याप्त है? स्वामी विवेकानद ने सटीक उत्तर देकर विरोधियों का मुह बंद कर दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि रोग-व्याधि से शरीर ग्रसित होता है। शरीर नश्वर है तथा भौतिक नियमों से बंधा है। भक्ति आध्यात्मिक सुख देती है। भक्त का ईश्वर से संबंध शरीर नहीं वरन आत्मा का होता है।

श्री रामकृष्ण ने सिद्ध किया कि केवल पोथी पढ़कर ही ज्ञानी नहीं बना जा सकता है। ईश्वर तक पहुँचने के साधन है – निःस्वार्थ प्रेम, जीवों के प्रति करुणा , ऊंचे आदर्श , पवित्रता , प्रेम एवं बाल सुलभ निष्कपट भाव। अपने अहंकार का त्याग कर ही आध्यात्मिक चेतना को जागृत किया जा सकता है। उनके अनुसार जिस मनुष्य का हृदय वैराग्य से भरा होता है, जो सदा ईश्वर का चिंतन करता है, वह ईश्वर का साक्षात्कार कर सकता है। ईश्वर निर्गुण भी हैं और सगुण भी।

सुस्मिता सरकार
वरिष्ठ लेखाकार

हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ।

हिंदी दिवस के अवसर पर राजभाषा मित्र शील्ड
पुरस्कार प्रदान करते उपमहालेखाकार महोदय

हिंदी पखवाड़ा 2019 के अवसर पर राजभाषा मित्र
(नकद) पुरस्कार प्रदान करते उपमहालेखाकार महोदय